✻ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ✻

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

छात्र विवेक दर्शन

:: रचयिता ::

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

छात्र - विवेक - दर्शन

रचयिता--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री श्रीजी महाराज

प्रकाशक--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)

अक्षय तृतीया
वि० सं० २०६१ श्रीनिम्बार्काब्द ५०९९

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

द्वितीयावृत्ति--
दो हजार

प्रकाशन सेवा-
स्व० कु० माधवी की पुण्य-स्मृति में
(सुपुत्री-श्रीब्रजमोहनजी छापरवाल, सूरत)

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
सात रुपये

विद्याधिष्ठात्री भगवती श्रीसरस्वती

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

* श्रीराधासर्वेश्वरो जयति * * श्रीसरस्वत्यै नमः *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

समर्पण

श्रीसर्वेश्वर - पदकमल, करके मङ्गल ध्यान ।
सरस्वती श्रीचरणरज, वन्दउ कर जय गान ॥१॥
सर्वेश्वर प्रभु जय सदा, जय सरस्वती मात ।
जय हो निम्बादित्य की, जय हो नित्य प्रभात ॥२॥
सर्वेश्वर श्रीसरस्वती, परम कृपामय धाम ।
जिन शुभ कृपाकटाक्ष से, प्रकट हुआ निष्काम ॥३॥
छात्र विवेक प्रबोध हित, सुगम सरस लघुरूप ।
छात्र-विवेक-दर्शन यह, अर्पण है कर धूप ॥४॥

चैत्र शुक्ल १ (नवसंवत्सर) गुरुवार
वि० सं० २०५६
दिनांक १८/३/९९

समर्पकः--
श्रीराधामाधवपदाम्बुजमकरन्दकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर-

स्वामी श्रीनिश्चलानन्दसरस्वतीजी महाराज

(जगन्नाथपुरीधाम) की

* शुभ - सम्मति *

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री **श्रीजी** महाराज प्रणीत **छात्र-विवेक-दर्शन** के अवलोकन व अनुशीलन से अतीव आह्लादित हुआ । मातृभक्ति, पितृभक्ति, आचार्यभक्ति, अतिथिसेवा, देश-भक्ति और भगवद्भक्ति की प्रेरणा से ओत-प्रोत यह रचना प्रेय और श्रेयसंज्ञक अभ्युदय और निःश्रेयस के उपयुक्त जीवन बनाकर मानव जीवन को सार्थक करने में सर्वथा समर्थ है । सदाचार, संयम, स्वधर्मनिष्ठा, शरणागति और स्वरूपविज्ञान के प्रति आस्थान्वित करने में यह रचना सर्वतोभावेन उपयुक्त है ।

वेद और वेदानुकूल शास्त्रों के प्रतिपाद्य धर्म और ब्रह्म हैं । प्रस्तुत रचना के अनुरूप जीवन यापन से धर्मनिष्ठा और ब्रह्मनिष्ठा समन्वित जीवन की अभिव्यक्ति सुनिश्चित है । अतएव लघुकाय होने पर भी समस्त वेदार्थ को स्फुरित करने वाला छात्र-विवेक-दर्शन वस्तुतः वेदार्थ दर्शन ही मान्य है ।

इसके अनुशीलन से सनातन धर्म के प्रति आस्थान्वित होना स्वभाविक है । घर-घर और जन-जन में इसका प्रचार-प्रसार हो ऐसी भावना है ।

चैत्र कृ. मंगलवार वि. सं. २०५५

दिनांक ९/३/९९ —निश्चलानन्द सरस्वती

अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्री १००८-

श्रीरामदयालजी महाराज

प्रधानपीठाधीश, अन्तर्राष्ट्रीय श्रीरामस्नेही सम्प्रदाय, शाहपुरा
जि. भीलवाड़ा (राजस्थान) की

शुभ सम्मति--

यद्यत्परवशं कर्म तत्तद्यत्नेन वर्जयेत् ।
यद्यदात्मवशं तु स्यात्तत्तत्सेवेत यत्नतः ॥

हृदय आह्लादित है **छात्र-विवेक-दर्शन** गागर में सागर जैसी हृदय स्पर्श रचना का आद्यन्त सिंहावलोकन कर !

छात्र जीवन अखिल विश्व के मानव जीवन का सुप्रभात एवं नींव है सुनहरे भविष्य के लिए प्रत्येक जगत् नींव का सुदृढ़तम होना नितान्त अनिवार्य है ।

छात्र-विवेक-दर्शन की लघुकाय सुरचना विराट् राष्ट्र के चहुँमुखी विकास व अध्यात्म प्रकाश हेतु सफलतम सिद्ध होगी । भारतीय सनातन संस्कृति के अग्रदूत अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी का तपोमय श्रम छात्र व्याजेन मानव मात्र के लिये बल्कि सर्वजन सुखाय सर्वजन हिताय च सिद्ध होगा ।

व्यसन फेशन एवं अज्ञानजन्य वातावरण में वर्तमान में यह **छात्र-विवेक-दर्शन** सम्यक् आचरण का सन्देश है । प्रकृति में रह कर विकृति को निर्मूल करते हुए संस्कृति की आराधना का निर्देश इससे मिलता रहेगा ।

आज का छात्र **छात्र-विवेक-दर्शन** का अनुशीलन करता है तो आने वाले कल का संस्कृत संस्कार निष्ठ प्रधानमंत्री होगा। और समूल राष्ट्र सुसंस्कारमय होगा । यह सरल, सरस, सुलभ, सुगम **श्री श्रीजी महाराज** प्रणीत सुरचना का आलोक सम्पूर्ण राष्ट्र को शिक्षा, संस्कार एवं सचारित्र्य से आलोकित कर कन्याकुमारी से कश्मीर अटक एवं सड़क से संसद् तक प्रकाश स्तम्भ सिद्ध होवे । इन्हीं मङ्गलकामनाओं के साथ ।

-आचार्य - स्वामी रामदयाल

राष्ट्र - सञ्जीवन है--

* छात्र - विवेक - दर्शन *

परमपूज्य प्रातःस्मरणीय जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज के द्वारा लिखित **छात्र-विवेक-दर्शन** नामक अभिनव पुस्तक की प्रेरणादायी दोहावली को पढ़कर वड़ी प्रसन्नता हुई । विशेष कर समाज एवं राष्ट्र के आशा स्रोत छात्र-छात्राओं के जीवन निर्माण में उदात्त भावनाओं की ऊर्जा प्रदान करने वाली इन पावन दोहावलियों में प्रसाद गुण की जो प्राञ्जल छटाएँ हृदय को आकर्षित करती हैं उनसे **महाराजश्री** की सारस्वत साधना की गरिमा उजागर हो रही है । भाव सौन्दर्य की दृष्टि से यह अनुपम कृति हृदयतः स्वागत योग्य है ।

आपश्री की अविश्रान्त तपः स्वाध्यायनिरत साधना के अमृतमय प्रसाद के रूप में आविर्भूत इस प्रेरक कृति के अध्ययन से आध्यात्मिक सत्प्रेरणाओं के कारण विश्ववन्द्य बने हुये भारत के महान् जीवन-मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी का ध्यान आकृष्ट होगा और चेतना जगेगी जिससे राष्ट्र के कोटि-कोटि कर्णधारों को जीवन निर्माण का मार्ग प्रक्रिया में रसायन की भूमिका निभा सकने वाली इस पावन कृति के सर्जन के लिये चरित्र को ही

जीवन की सच्ची निधि मानने वाले कोटि-कोटि हृदयों की आस्थायें श्रीचरणों के प्रति आभारी रहेंगी, इसमें कोई सन्देह नहीं ।

अमृत भाषा सुर-भारती में दर्जनों अमूल्य कृतियों का सर्जन कर चुकी श्रीचरणों को सजग एवं प्रखर लेखनी से निःसृत यह अनुपम कृति अपनी भव्यता के अनुरूप वाणी साहित्य की श्रीवृद्धि में योगदान देते हुये समाज एवं राष्ट्र के लिये वरदान बन सके प्रभु श्रीराधामाधवजी के श्रीचरणों में हमारी यही प्रार्थना है ।

श्रीचरणों का सदा स्नेहाकांक्षी--

आचार्य खेमराज केशवशरण

व्या. साहित्याचार्य, लब्ध स्वर्णपदक

निवृत्त प्राध्यापक, म. सं. विश्वविद्यालय

शरणागति अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक प्रतिष्ठान

घ २/४३ केशवकुटी सिफल, काठमाण्डू-नेपाल

छात्र जीवनोपयोगी छात्र-विवेक-दर्शन

प्रातःस्मरणीय अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर के द्वारा प्रणीत छात्र-विवेक-दर्शन नामक लघु-प्रस्तिका दृष्टि-पथ में आई । पुस्तक अत्यन्त लघुकाय होती हुई भी गागर में सागर तुल्य अथवा बहुमूल्य दुर्लभ गजमौक्तिक तुल्य अपार ज्ञानसागर से परिपूर्ण है । यह पुस्तक विशेषतया तीन भागों में विभक्त है । इसका आद्य भाग सभी विद्यार्थियों के लिये तथा दूसरा भाग आचार्यपीठस्थ विद्यालयीय छात्रों के लिये एवं तृतीय भाग समग्र छात्रा-समाज के लिये उपयुक्त है ।

इस पुस्तक में आचार्यश्री ने समस्त शिष्टाचार व धार्मिक विचारों का सार विवेक-मथनदण्ड तथा बुद्धि रज्जु (नेता) के द्वारा विडोलन कर नवनीत गोलवत् निकालकर सभी के सम्मुख रख दिया है । इस विवेक-नवनीत जिसके सेवन से छात्रवृन्द सदाचारी, शिष्ट व कुशाग्रबुद्धि बन सकते हैं ।

सर्वप्रथम प्रातःकाल शय्या से उठकर स्नान शौचादि से निवृत्त होकर स्वेष्ट देवता प्रार्थना पूर्वक प्राणायाम तथा योगासनों का सेवन करते हुये ब्राह्ममुहूर्त में सरस्वती वन्दना अथवा ध्यान पूर्वक विद्याध्ययन करें । इस पुस्तिका में छात्रों को दुर्व्यसन परित्याग करना, माता-पिता-गुरुजनों की सेवा करना, दीन-

दुखियों का दान-सम्मान करना तथा मद्य-मांसादि दुराचरण निषेध वृथा अपशब्द, अश्लील शब्दोच्चारण-निषेध इस तरह अनेक प्रकार से शास्त्रोक्त विधि-निषेधों का स्पष्टतया उल्लेख किया है। सारांश यही है कि छात्र जीवन एक बहुत ही संवेदनशील हैं। बाल्यावस्था में ही सुसंस्कार या कुसंस्कार बालकों में उत्पन्न होने का भय रहता है। इसलिये उत्तम सत्संगति करना ही छात्र जीवन का प्रमुख ध्येय है। **सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ? संगः सतां किमु न मंगलमातनोति** इत्यादि ज्ञानवर्धक सूक्तियां मनुष्य को शाण पर कसे हुये हीरे की तरह बहुमूल्य तत्त्व बना देती है। क्योंकि सत्संगति बुद्धि के मान्द्य दोष को दूर करती है, सत्य भाषण व सत्य सात्विक व्यवहार ज्ञान सिखाती है, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाती है। पापों से बचाती है। मन को पवित्र बनाकर सर्वत्र यश का प्रसार करती है, अतः यह छात्र-विवेक-दर्शन नामक पुस्तक ज्ञानालोक पूर्वक सत्पथ निर्देशन करती है।

महाराजश्री ने अपने इस पावन जीवनकाल (वर्तमान) में अनेक धार्मिक व सन्मार्ग दर्शक ज्ञान वर्धक पुस्तकों की रचना की है। प्रायः सभी धार्मिक विषयों तक अविरल गति से आपने अपनी लेखनी को पहुँचाया है। अनेक काव्य-स्तोत्र व धार्मिक पुस्तकें आपश्री के द्वारा प्रणीत की गई है। यह चौवीसवाँ ग्रन्थ छात्रों के लिए अत्यन्त उपादेय है।

निम्बार्कभूषण आशुकवि--

पं. सत्यनारायण शास्त्री काव्यतीर्थ, अजमेर

* पुरोवाक् *

हम राजस्थानवासी इस बात से गौरवान्वित है कि भक्ति मार्ग के वैष्णव प्रधान आचार्यों में से दो के प्रधानपीठ राजस्थान में स्थित हैं । जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य का प्रधानपीठ अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद में तथा महाप्रभु श्रीबल्लभाचार्य का श्रीनाथद्वारा में स्थित है । इससे अधिक गौरव की बात यह है कि अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज संस्कृत के चूडान्त विद्वान्, वेदान्त के तलस्पर्शी मनीषी, प्रांजल वक्ता साथ ही संस्कृत और हिन्दी के सुललित कवि भी हैं । मैंने निम्बार्क दर्शन पर आधृत इनके ग्रन्थों और स्तोत्रादि काव्यों (श्रीसर्वेश्वरशतकम्, श्रीस्तवरत्नाञ्जलि, श्रीवृन्दावनसौरभम् आदि) तथा संस्कृत गीतियों के अतिरिक्त देश के प्रति अविचल निष्ठा अभिव्यक्त करने वाले अनके संस्कृत और हिन्दी काव्यों (भारत-भारती-वैभवम्, भारतकल्पतरु आदि) का अवलोकन किया तो लगा कि हमारे आचार्य कितनी सार्थक सारस्वत साधना और देश सेवा कर सकते हैं । जिनकी लेखनी में क्षमता है उनमें से भी कुछ ही ऐसा सार्थक सारस्वत अवदान देश को दे रहे हैं । श्री श्रीजी महाराज उन विरले, वन्दनीय और कनिष्ठिकाधिष्ठित

आचार्यों में प्रमुख हैं जो निरन्तर अपनी लेखनी से सारस्वत साधना और उसके द्वारा समाज का स्तुत्य मार्ग दर्शन कर रहे हैं ।

जब मैंने आचार्यश्री के लिखे सदुपदेशात्मक, ललित और प्रांजल हिन्दी के दोहे देखे तो इस बात को देखकर आह्लाद हुआ कि भाषा और व्याकरण पर इस प्रकार के अधिकार के साथ सन्तुलित और श्रेयस्कर चिन्तन के धनी ऐसे मनीषी समाज को मार्गदर्शन देने वाला ऐसा साहित्य लिखें तो उसकी सार्थकता अवश्य ही असन्दिग्ध होनी है । आज की जीती जागती हिन्दी में हृदयावर्जक, सहज शैली में लिखे ये दोहे जिज्ञासुओं को भी सरलता से हृदयङ्गम हो जाते हैं । श्री श्रीजी महाराज द्वारा रचित दोहों की छटा विवेक-वल्ली में भी देखी जा सकती है । उसी सहज शैली में नई पीढ़ी के मार्गदर्शनार्थ लिखे दोहों का संकलन अब **छात्र-विवेक-दर्शन** शीर्षक से प्रकाशित होकर एक नये और चिर-प्रतीक्षी क्षेत्र की उस अपेक्षा की पूर्ति करेगा जो आज के सन्दर्भ में स्पष्ट अनुभव की जा रही है, यह मेरी मान्यता है । इन दोहों में भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म-परम्परा के उन चिरपोषित मूल्यों की सहज प्रस्तुति, विवेचन और निर्वचन निबद्ध है जो सदा के साधकों, भक्तजनों और धर्म-परायण युवकों के भी जीवन के लिये आदर्श रहे हैं किन्तु आजकल भुला दिये गये से लगते हैं । इनमें भक्ति के सूत्र भी हैं, राष्ट्र के प्रति आस्था की प्रेरणा भी और धर्माधारित जीवन के आदर्श भी ।

छात्राओं के लिए विशेषतः उद्दिष्ट दोहों में नारी की, मातृशक्ति की गरिमा का जो संकेत है वह हमारी सांस्कृतिक परम्परा में महिलाओं के प्रति सम्मान का प्रतीक है । अन्त में गेय पदों में निबद्ध सरस्वती वन्दनाएँ भी हैं जो छात्रों के कार्यक्रमों के लिए उपयोगी रहेगी । दोहों में आचार्यश्री ने प्राचीन कवियों की परम्परा के अनुसरण में शरण नाम की छाप (जिसे भनत कहा जाता है) भी अंकित की है । सन्मार्ग की प्रेरणा देने वाली इस हिन्दी काव्य भागीरथी से युवा पीढ़ी के हृदय पटल निर्मल एवं पावित हों इस शुभाकांक्षा के साथ मैं हिन्दी काव्य सर्जन के उपलक्ष्य में आचार्यश्री के चरणों में सप्रणति बधाइयाँ अर्पित करता हूँ ।

निवेदक--

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

भूतपूर्व अध्यक्ष राजस्थान संस्कृत अकादमी

तथा निदेशक-संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग

राजस्थान सरकार

प्रधान सम्पादक--

भारती संस्कृत मासिक - पत्रिका

वैशाख शु. ३(अक्षय तृतीया)

वि. सं. २०५६

दि. १८/४/९९

सी/८ पृथ्वीराज रोड़

जयपुर - ३०२००१

* छात्र-जीवन-दर्शन *

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठा-धीश्वर श्री श्रीजी महाराज श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद (राजस्थान) ने **छात्र-विवेक-दर्शन** की रचना कर छात्र जगत् का व्यवहार दर्शन ही संस्थापित किया है । अपने समीप अन्तेवासियों की सुदीर्घ परम्परा का अधुनातम आचार-विचार तथा अपनी शिक्षालयों की यात्रायों में परिदर्शित छात्र जगत् की क्रिया-प्रक्रियाओं, हाव-भावों, रहन-सहन, जीवनचर्या, मानसिकताओं, मन, शरीर, वाणी के गुणाव-गुणों का इस शैक्षिक रचना में गुढ़ार्थपरक सरल, सशक्त प्रसाद एवं चमत्कृति पूर्ण काव्यमयी रचना में यों प्रतीत होता है भगवती माँ सरस्वती गंगा की रसधारा बनकर कलयुगी प्रभावों से विचलित, विखण्डित और अर्द्धतृप्त बालवाड़ी का संतर्पण करने ही प्रकट हुई हो ।

चाहे आयुर्वेद सम्मत दिनचर्या हो, चाहे भागवत धर्म परक जीवन शैली हो अथवा सामाजिक परिवेश के अनुकूल विद्या संस्कारों की, संस्थापना हो आचार्यश्री ने अपनी इस अमृतमयी रचना में अपने हृदय के सात्विक रस को निचोड़ कर सारस्वत चरणामृत प्रसाद के रूप में, सारस्वत राजस पंचपात्र में विद्यार्थी जगत् को छात्रों के लिए मननीय--१. पीठस्थ छात्रों के लिए २. सर्वाङ्गीण छात्रा जगत् के लिए ३.अभिभावकों के लिए ४. शिक्षकों के लिए ५. इस प्रकार पंचपात्र में-पंचामृत रूपी अमृत कलश को लोक कल्याण के लिए अवतरित किया है ।

सरलतम भाषा पूर्णतया स्वाभाविक छात्रों की जीवन-शैली, संस्कृत-संस्कृति, धर्म और शिक्षा को सदाचार के राजसिंहासन पर

स्थापित करने वाला यह काव्य अनुपम है, अभिवन्दनीय है । प्राथमिक एवं माध्यमिक तथा वरिष्ठ पाठ्यक्रमों के अनुपोषण हितार्थ इस रचना का सार्वजनिक स्वागत होगा तथा भावी रचनाओं के लिए ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र की भाँति शिक्षा-सूत्रों के रूप में मार्गदर्शक बनेगा। २३३ रचनाएँ तथा अष्टपदी से अभिमण्डित यह छात्र मंजूषा छात्रों के चरित, ज्ञान, आचरण, विवेक, कर्म तथा सुपरिणाम को सुरक्षित रखने का सहस्त्रार्चिप्रकाशलोक है, जिन दिशाओं का दिग्दर्शन बड़े-बड़े ग्रन्थों में भी छात्रों को सहज सुलभ नहीं होता उनका समागम इस दिव्य शारदा वीणा से छात्र जीवन निर्झरित अर्थात् संदर्शित होरहा है।

मैं यशस्वी रचना की व्यापक प्रचार-प्रसार तथा वितरण की मंगल कामनाएँ करता हूँ एवं शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी, अभिभावक तथा समाजरूपी वट वृक्ष की ओर इस कृति के प्रति एवं आचार्यश्री के रचना सौष्ठव की सार्थकता, भावी आदर्श, भारतीय शब्दब्रह्म की रचना के सारस्वत यज्ञ की प्राण-प्रतिष्ठा को सादर वन्दन करता हूँ, अभिवन्दन करता हूँ ।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के पूर्ववर्ती आचार्यों ने दार्शनिक एवं शिक्षामय साहित्य संरचना की जो परम्परा स्थापित की थी उसे वर्तमान आचार्यश्री ने अपनी अनुशीलन और अनुभवपूर्ण काव्य गुण गरिमा की वल्लरी से मकरन्दायित किया है । वासन्तिक किया है और इस युक्ति को चरितार्थ किया है कि--

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।
नास्ति तेषां यशःकाये पांचभौतिकं भयम् ।।

-महन्त श्रीमुरलीमनोहरशरण शास्त्री
मेवाड़महामण्डलेश्वर, स्थल-उदयपुर (राज.)
अध्यक्ष - अ. भा. श्रीनिम्बार्क महासभा

अपने दो शब्द

श्रीनिम्बार्क-मुद्रणालय से अतिसुन्दर, स्वच्छ, विशुद्ध एवं सौन्दर्यपूर्ण, अनुकरणीय जगद्गुरु निम्बार्काचार्य **श्री श्रीजी महाराज** प्रणीत **छात्र-विवेक-दर्शन** के दर्शन से प्राप्त दो निम्न भाव निम्नाङ्कित हैं।

१. गागर में सागर भूल गया देखा बूँद में सागर।

२. मुक्तक छन्द का अभूतपूर्व दिग्दर्शन, कबीर-रहीम के दोहों की अर्वाचीन-सम्यक्-क्रान्तिकारी अभिव्यक्ति।

वैदिक पद्धति एवं क्रियाशीलता की अनुपम बोधगम्यता सनातन है, चिरस्थायी है मानव जीवन की अमर संहिता है, विश्व स्वीकारता है- हम उसकी अभिव्यञ्जना तो स्मरणमात्र करते ही हैं परन्तु वर्तमान युग की अभेद्य अवधारणा के दृष्टिगोचर होते ही उस रंग में रंग जाते हैं जो अध्यात्म के ही सर्वथा विपरीत नहीं है वरन् आधुनिक विज्ञान परिचय में भी मानव के लिए अकल्याणकारी है, घातक है।

ऐसे युग में राजतन्त्र के असफल एवं अनैतिक मनमाने विधान का निर्भीक तथ्यपूर्ण और तर्कपूर्ण विवेचन तथा सुन्दरतम विचारों की पुष्टि आचार्यश्री द्वारा मूलतम आधार निरूपण सर्वथा आदर्श और उज्ज्वल भविष्य का द्योतक है। बाल-साहित्य द्वारा बाल बोध का बालरूप में प्रबोधन कितना ग्राह्य है, कितना अनिवार्य और उज्ज्वल भविष्य की आधार शिला है, यह **छात्र-विवेक-दर्शन** में किसे प्रकट नहीं होगा ? धन्य है अमृतवाणी निर्झर लेखनी अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्यजी महाराज की।

आज का संसार विषमता, चलचित्रों की अश्लीलता, ध्वनि-विस्तारक की अमर्यादित एवं राजतन्त्र प्रणेताओं की अनैतिकतापूर्ण क्रियाशीलता की अधिकारपूर्ण कार्यान्विता से ओत-प्रोत है, भारतवर्ष

की परम्परागत उत्तम सन्तति किससे मार्गदर्शन ले, कहाँ पलायन करे, नैतिकता और शान्ति का गुरु स्थल कहाँ है ? **छात्र-विवेक-दर्शन** के ये शब्द उनके धर्म-कर्म-विद्या-विवेक के अनुकरणीय पथ और उत्प्रेरक गुरु स्थल है, ग्रन्थ है, अस्तु ।

दुर्व्यसनों का त्याग हो, गुटका-बीड़ी-चाय से रहो सदैव सुदूर, चलचित्रों का त्याग शुभ, आपस में अश्लील शब्द गाली वृथा प्रयोग, हडबड-हडबड मत करो, वृथा आन्दोलन न करो, कभी न कोलाहल करैं, हिन्दी भाषा बोधकर, अश्लील-नाटक-नाटिका अश्लील उपन्यास, अश्लील साहित्य न पढ़े, संतवेष में धूर्तजन उनकी कर पहचान, तस्कर-वंचक कर्म का सदा रखो परिज्ञान, साबुन प्रयोग ना करे, पैंट-पाजामा आधुनिक अधोवसन परिहार आदि कतिपय उपर्युक्त विचार क्रान्तिकारी हैं ही परन्तु आधुनिकतम राजतन्त्र की कृति पर सुन्दर कार्य प्रणाली और विह्वल है नीचे देखिये--

जन्मभूमि अतिश्रेष्ठ है, भव्य भारतवर्ष की विजय निरन्तर बोल, संघटन करके रहो, स्वराष्ट्र हित चिन्तन निरत, कालगति अवलोकन विधि तदनुसार उपदेश और अन्ततः-भारत माता वन्दन कर, जो जन का आदर करै शरण परम कल्याण ।

अतः ऐसा प्रतीत होता कि **छात्र-विवेक-दर्शन** पूर्व प्रकाशित विवेक-वल्ली की भाँति विवेक दर्शन के रूप में भाव स्फुरित होकर अखिल मानव समाज के परिकल्पित रामराज्य का शिलान्यास और आधारशिला स्वरूप बन गया है ।

-रामलोचनप्रसाददास एम. ए.
साहित्यालंकार-साहित्यरत्न, अवकाश प्राप्त जिला शिक्षा अधीकक्षक
ग्राम -देवजीत परसौनी, विहार

जीवन निर्माण के लिए एक आचार संहिता-

छात्र-विवेक-दर्शन

हमारे राष्ट्र के स्वतन्त्र होने के पश्चात् राष्ट्रीय-संस्कृति एवं धर्म का जितना पतन हुआ उतना परतन्त्रता के समय में भी नहीं हुआ, इस राष्ट्र की अमर-संस्कृति और धर्म का उत्त्थान एवं ह्रास होता रहता है किन्तु अमरतत्त्व का विनाश कदापि संभव नहीं । भारत का इतिहास साक्षी है कि जब-जब भी आसुरी शक्ति के प्राबल्य से मानव जीवन में धार्मिक ह्रास एवं मानवता का पतन हुआ, यहाँ के पूज्य धर्माचार्यों तथा तपःपूत महान् मनीषियों ने धार्मिक जागृति की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर चिरस्मरणीय अमर कीर्तिमान स्थापित किये ।

राष्ट्र के सांस्कृतिक उत्त्थान की दिशा में छात्र ही उसकी आधार-शिला है । छात्र निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है । अतः आज के युग में छात्र जीवन के निर्माण की महती आवश्यकता है ।

उक्त विषयों को ध्यान में रखते हुए परम पूज्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज ने अपनी सास्वत समाराधना के अन्तर्गत छात्र-विवेक-दर्शन ग्रन्थ की रचना की है। यह साहित्य-पुष्प छात्रों के लिए तो एक आचार संहिता का रूप है ही, साथ

ही अभिभावक (माता-पिता-संरक्षक) एवं शिक्षकों के लिये भी कर्तव्य-बोध कराने में हितकारी सिद्ध होगा । छात्र-जीवन के प्रत्येक पक्ष को स्पर्श करते हुये महत्वपूर्ण मार्मिक उद्बोधन किया गया है । सरल एवं सरस भाषा में आचार्यश्री के परम-पावन अन्तःकरण की यह अभिव्यक्ति निश्चित रूप से सार्वजनीन मङ्गलमय पथ-प्रदर्शन करने में सर्वथा सार्थक होगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है ।

श्रीमच्चरणकमलचञ्चरीक--
पं० दयाशंकर शास्त्री
निम्बार्कभूषण, पुराण-साहित्याचार्य, एम. ए.
शिक्षामन्त्री - अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति

छात्र और स्वाध्याय

मानव जीवन का प्रथम भाग अर्थात् २०-२५ वर्ष पर्यन्त का समय विद्योपार्जन का होता है । इसको छात्र जीवन कहा जाता है बालक सर्वप्रथम प्रारम्भिक विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करता है । क्रमशः जब वह उच्च कक्षाओं में आरूढ़ होता है तब परम आनन्द की अनुभूति करता है और असफल होने पर दुःखी होता है । एक बार प्रथम कक्षा के एक प्रतिभावान् बालक जो स्वयं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की आशा रखता था, किसी ने हँसी खेल में उसे कह दिया तू अनुत्तीर्ण हो गया तब वह इतना रोया उसे चुप कराना कठिन हो गया । जब उसे सचमुच प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की सूचना दी गई तभी वह प्रसन्न हुआ । छात्रों का जीवन अत्यन्त निर्मल होता है, सारे झंझटों से मुक्त निष्कलंक उनका मन अनेक जिज्ञासाओं से भरा होता है । इस अवस्था में बालक को उत्तम शिक्षा, सही दिशा निर्देशन मिल जाय तो आगे चलकर वह महान् विद्वान्, विचारक, मनीषी, राष्ट्रनायक अथवा धर्माचार्य बन सकता है । कहा भी है--

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये न तपस्तप्तं चतुर्थे किं करिष्यति ।।

यद्यपि वर्तमान परिस्थिति में बढ़ते वैज्ञानिक उपकरणों भौतिक संसाधनों, विलासतापूर्ण वातावरणों से छात्र जीवन भी प्रभावित हो रहा है, दूरदर्शनों में राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों, शिक्षाप्रद प्रसंगों को कम देखते सुनते हैं, चित्रहार आदि उत्तेजक दृश्यों को अधिक देखते हैं जिससे मानसिक विकृति उत्पन्न हुए बिना नहीं रह सकती । एतावता छात्र जीवन का मुख्य ज्ञानार्जन गौण हो जाता है जिससे उनका भावी लम्बा जीवन हो जाता है तथा स्वयं पश्चात्ताप की ज्वाला में जलते रहते हैं ।

इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखकर देश के करोड़ों विद्यार्थियों को दिशा निर्देशन व सन्मार्ग की ओर अग्रसर कराने के उद्देश्य से हमारे प्रातःस्मरणीय अनन्त श्रीनिभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज ने सर्वजनवेद्य सरल हिन्दी भाषा में दोहा, पद्यात्मक **छात्र-विवेक-दर्शन** नामक लघु पुस्तिका की रचना कर उसे प्रकाशित कराया है । सम-सामयिक वातावरण में जिन कुप्रसंगों, दुर्व्यसनों ने समग्र छात्र जगत् को आक्रान्त कर रखा है उनसे बचने के लिए छात्रों को सतत स्वाध्यायशील रहने की सत्प्रेरणा इसमें दी गई है । प्रातःकाल से रात्रि पर्यन्त की दिनचर्या में छात्रों को क्या अभीष्ट क्या अनभीष्ट है इसकी दोहा-दोहा में प्रचुर रूप सें दिग्दर्शन कराया गया है । पूज्य आचार्यश्री ने **गागर में सागर** की उक्ति को चरितार्थ करते हुए इसे इतना महत्वपूर्ण बनाया है कि छात्र यदि एक बार भी इसका ध्यान से अध्ययन करेंगे तो निश्चय ही उन्हें उत्तम प्रेरणा प्राप्त होगी ।

इस **छात्र-विवेक-दर्शन** में स्वाध्याय पर विशेष बल दिया गया है । स्वाध्याय के बिना विषय का ज्ञान सुदृढ़ नहीं हो सकता । इसीलिए कहा गया है **स्वाध्यायान्मा प्रमदः** स्वाध्याय से प्रमाद (पलायन) न करो । अतः छात्रों को **छात्र-विवेक-दर्शन** का आश्रय लेकर अपना विवेकपूर्ण उत्तम आदर्शमय जीवन बनाना चाहिए ।

श्रीचरणरजरेणु--

पं० वासुदेवशरण उपाध्याय

व्या० सा० वे० आचार्य निम्बार्कभूषण

प्राचार्य - श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्कतीर्थ

छात्र-विवेक-दर्शन में निर्दिष्ट दिशादर्शन

ज्ञानोदय शिक्षा का मूल उद्देश्य है, शिक्षा बाल-मानस में सुषुप्त अन्तर्निहित-प्रकृति-प्रदत्त-विवेक को जागृत कर उसमें स्वानुभूतिपरक निर्मल आत्मबोध द्वारा परीक्षित, सहज और स्वाभाविक ज्ञान का उदय कराती है । ऐसी शिक्षा से ही पूर्णोदय होता है जिससे पूर्ण विकसित, सहज-संस्कारित व्यक्ति तथा आदर्श रूप में वांछित मनुष्य का निर्माण सम्भव है । शिक्षा थोपने की वस्तु नहीं होती, शिक्षा और शिक्षण सार्थकता **सीख शरीरां उपजै** वाली सहज और सुग्राह्य परिस्थितियों की ऐसी सुरुचिपूर्ण, उत्प्रेरक तथा सम्यक् प्रस्तुति करना है कि अज्ञान के प्रति आत्मबोध द्वारा ज्ञान पिपासु स्वयं ही जलप्रभा की ओर उन्मुख हो जाय, ज्ञान का आलोक और विवेक का आनन्द तो स्वतः ही प्रस्फुटित हो जाता है । आधुनिक बाल-मनोवैज्ञानिक भी ज्ञान-तृष्णा का महत्व स्वीकारते हुए कहते हैं कि तृषित होने पर एक सारथी शताधिक अश्वों को जल पिला सकता हैं, नहीं तो सौ सारथी एकजुट होकर भी एक अश्व को भी जल पिलाने में समर्थ नहीं होते । अतः यह श्रुति प्रतिपादित तथ्य है कि सुरुचिकर सुग्राह्य उद्बोधनों से प्रेरित स्वात्मबोध अन्धकार से प्रकाश का तथा असत्य से सत्य का मार्ग प्रशस्त करता है, माया से आवृत्त जीव को मृत्युबोध से ही अमरता साधित होती है--**तमसो मा ज्योतिर्गमय। असतो मा सद्गमय । मृत्यो र्मा अमृतं गमय।** आधुनिक सामाजिक--राजनैतिक--सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य की अनेक विभ्रांतियों से भ्रमित छात्रों में स्वात्म-बोध

एवं सम्यक् विवेक जागृत करने वाली आदर्श शिक्षा अपेक्षित है, शिक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे क्रान्तिकारी परिवर्तनों की नितान्त आवश्यता है, जिससे सुवा-छात्र समुदाय की राष्ट्रीय समस्याओं का समुचित समाधान हो तदुपरान्त ही विश्ववन्द्य भारत की गरिमा को पुनः प्राप्त करने का हमारा सुसंकल्प साकार हो सकेगा ।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा विरचित **छात्र-विवेक-दर्शन** में नवागत पीढी के कर्णधार, युगनिर्माता, महा-मनीषी, परमाचार्यश्री ने वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में छात्र-छात्राओं की वस्तुस्थिति के प्रेरणात्मक तथा तत्सम्बन्धित समुचित उद्बोधनों के माध्यम से भारतीय आध्यात्म प्रधान चारित्रिक विशेषताओं से सुसम्पन्न, दिव्यगुणालंकृत, बालवय में चिरविचरित ब्रह्मा के मानस पुत्र सनकादिकों सदृश, भारतीय-सनातन-परिवेश के ध्रुव-प्रह्लाद-हनुमान् जैसे अभिलषित व्यक्तित्व निर्माण का अत्यन्त सफल-सुसाहित्यिक-सुशैक्षिक स्तुत्य प्रयास किया है । इतना ही नहीं आपने इस क्रान्तिकारी ग्रन्थ से समग्र सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना भी जागृत की है कि नयी पीढी का समुचित मार्ग दर्शन समस्त वयोवृद्ध समाज का परम पवित्र और अपरिमेय उत्तरदायित्व है, शिक्षक-शिक्षाविद्-धर्माचार्य-राजनेता-शासक तथा मातृपितृ पक्ष सभी का सर्वतोमुख्य यही कर्तव्य है ।

छात्र-विवेक-दर्शन चरित्र निर्माणकारी युगसमीचीन प्रेरणा-त्मक रचना है । सुकोमल-परम पवित्र-सात्विक और सरल

बाल मानस में सत्यासत्य के प्रति आत्मबोध द्वारा स्वानुभूतिपरक ज्ञान और विवेक को उत्पन्न करने की अन्तर्भावना से परमाचार्यश्री ने तदनुरूप पुस्तकाकार में गहन ज्ञानगर्भित, सुग्राह्य-सरल भाषा और सुगम्य दोहा छन्द में आवेष्ठित, सार्थक-सटीक-समीचीन तथा नितान्त उपादेय उपदेश संकलित किये हैं । ग्रन्थारम्भ के १३१ दोहों में सभी छात्रों के प्रति, तदनन्तर १३२ से १७३ दोहों में आचार्यपीठस्थ विद्यारत विद्यालीय छात्रों के हितार्थ महनीय-मननीय- वर्जनीयात्मक-ग्रहणीय सुदपेदश समाविष्ट किये है । छात्र हिताय सुसम्पादित इस रचना से भारतीय काव्यशास्त्रानुसार साहित्य के मूल में निहित हितसाधना का काव्य प्रयोजन स्वतः ही परिभाषित हो गया है--

कीरति भगति भूरि भली सोई । सुरसरी सम सबकर हित होई ।

मानसकार महात्मा तुलसीदास के दोहों में निहित इस हित साधना से ही दोहा सदुपदेश का प्रतीक बन गया है । आचार्यप्रवर द्वारा विरचित बहुसंख्यक व्यापक दोहा छन्दों के विशाल काव्य का भी यही लक्ष्य है । प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रत्येक दोहा छन्द के अन्तिम चरण में व्यवहृत कवि नाम द्योतक "शरण" शब्द गूढार्थक है जिससे परमरसिक ग्रन्थकार आचार्यप्रवर की परमाराध्या श्रीस्वामिनी प्रियाजी के दृढ चरणाश्रय के प्रति अविरल एवं प्रगाढ-प्रपन्नभावाभिव्यंजना हुई है, प्रतिपल शरणागति का स्मरण ही परम वैष्णवता का परिचायक है-- वस्तुतः यह कविताई नहीं श्रीराधामाधव के स्मरण का ही द्योतक है । "शरण" शब्द से भारतेन्दु सा काव्य लक्ष्य स्वतः ही प्रतिबिम्बित हुआ है । आत्मीय अन्तर्भावना के पृष्ठ १० के उपसंहार में ग्रन्थकार भी भगवान् श्रीराधामाधव-सर्वेश्वर प्रभु से मुहुर्मुहुः यही अभिवांछा

करते हैं किसी भी मंगलदायी विधा से पावन सरणि से, आपके श्रीयुगलपद कमलों में निर्हैतुकी अनन्य-अनुरक्ति पराभक्ति अविरल रूप में अस्मन्मानस में सुस्थिर रहे बस यही एकमात्र स्पृहा है । अस्तु निम्नांकित कवि वचनों में निहित ग्रन्थ का अभीष्ट छात्रहित-साधना सुस्पष्ट है जो कवि हृदय की सर्वमंगलमयी भावना से प्रेरित है--

प्रस्तुत पुस्तक को पढो, जिसमें मिलै विवेक ।
छात्र छात्रा हित अहितकर, "शरण" रखें प्रभु टेक ॥
छात्र हितार्थ प्रतिपादित, समुचित शुद्ध विधान ।
इन अवहेलन ना करे, "शरण" पात्र सम्मान ॥
प्रस्तुत इस लघु ग्रन्थ में, जो निर्दिष्ट विचार ।
छात्र छात्रा हितकारी, "शरण" उचित हिय धार ॥

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष भारतीय जीवन के सनातन उद्देश्य हैं । मोक्ष प्राप्ति जीवन का चरमलक्ष्य है, इसीलिए भारतीय मनीषियों ने शिक्षा का मूलोद्देश्य भी आध्यात्मिक माना है । धर्म-अर्थ-काम से जीवन का मोक्षदायक संस्कार तदनन्तर वही शिक्षा दृढ इष्ट-आराधना का मार्ग प्रशस्त करने वाली हो । अध्यात्म प्रधान शिक्षा के इसी प्रयोजन का प्रतिपादन करते हुए छात्र-विवेक-दर्शन के प्रणेता आचार्यप्रवर ने परमाराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु के प्रति अनन्य भक्ति भावना, शास्त्रानुशीलन तथा आत्म निरीक्षण से विशुद्ध ज्ञान एवं अत्यन्त शुभ सात्विक विवेक की जागृति होना बताया है । परमहितकारिणी शिक्षा वही है जो समुचित, सर्वोत्तम, सात्विक

मर्यादित तथा आध्यात्मिक रूप से जीवन का विकास करते हुये बालक में निहित पशुवत प्रवृत्तियों का संस्कार कर उसमें दिव्य शक्तियों का सन्निवेश करे--

शास्त्रादि अनुशीलन सह, हो सर्वेश्वर ध्यान ।
आत्म निरीक्षण जो करे, "शरण" सदा शुभ मान ।।

आधुनिक शिक्षा उद्देश्यहीन होने से निरर्थक है क्योंकि इससे शिक्षार्थी का यथेष्ठ रूप से भौतिक-आध्यात्मिक-चारित्रिक-मानसिक एवं बौद्धिक विकास सम्भव नहीं हुआ है, यह शिक्षा तो नितान्त एकांकी सिद्ध हुई है जिसने युवा पीढी को बेकार एवं रुग्ण बनाया है । विभिन्न व्यवसायोन्मुखी बहुउद्देशीय शिक्षा योजनायें भी विकलांग होने से अव्यावहारिक अनुपयोगी एवं असफल सिद्ध हुई हैं, परिणामतः शिक्षा का आमूलचूल परिवर्तन अद्यावधि चर्चित है। स्वातन्त्र्योत्तर अर्द्धशताब्दी पश्चात् भी आदर्श शिक्षा प्रतीक्षित है ।

स्वदैशिक-सांस्कृतिक वैचारिक परम्पराओं पर आधारित जीवनोपयोगी शिक्षा के अभाव में आज का नवागत छात्र समाज अपनी विशिष्ट भारतीय पहिचान खो चुका है । स्वामी विवेकानन्द-स्वामी रामतीर्थ जैसी विभूतियों का भारत माँ की कुक्षी से पुनरागमन अब असम्भव प्रतीत होता है क्योंकि आधुनिक छात्र-छात्राओं के आचार-विचार में हीन कुंठाओं से उत्पन्न पाश्चात्य अन्धानुकरण ने उन्हें अभारतीय तथा बहुरूपियों सा बना दिया है । खान--पान-

वेशभूषा, आचार-विचार-वाणी विलास सभी इसमें आधुनिक सभ्यता के नाम पर अभद्र प्रदर्शन हो रहा है । बेकारी एवं रोजगार की साधनहीन विवशताओं से उत्पन्न जीवनपलायन ने उसे प्राणघाती नशा-व्यसन, जुआ-तस्करी तथा सामाजिक आर्थिक अपराधों की ओर प्रवृत्त कर दिया है । **छात्र-विवेक-दर्शन** के प्रणेता युगद्रष्टा आचार्यवर्य वर्तमान पीढी में परिव्याप्त इन दुर्दशाओं के प्रति चिन्तित हैं, तदनुरूप आपने वर्जनात्मक निर्देश और ग्रहणीय सुदपदेश देकर मंगलकारी मार्ग प्रशस्त किया है । जो छात्रों के लिये अत्यन्त हितकारी एवं परम उपादेय है । आचार्यपीठस्थ छात्रों के लिये आगामी प्रसङ्ग आचार-संहिता सदृश मार्गदर्शक है । छात्र-छात्राओं के लिये यह ग्रन्थ नितान्त मननीय आचरणीय एवं सर्वदा हृदय में अवधारणीय है । समूचा ग्रन्थ युगसमीचीन भारतीय वैदिक संस्कृति का मूलाधार चरित्र निर्माणकारी होने से निश्चय ही अत्यन्त उपादेय और प्रशंसनीय है । ऐसा सत्साहित्य परम स्वागतार्ह है ।

--**डॉ० रामप्रसाद शर्मा** निम्बार्कभूषण
एम. ए. पी. एच्. डी.
किशनगढ (राजस्थान)

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

❊ आत्मीय अन्तर्भावना ❊

मानव की शैशव, कौमार, पौगण्ड, कैशोर, यौवन, वार्धक्य आदि समस्त अवस्थाओं में बाल-अवस्था अत्यन्त सुभग सात्विक आनन्दप्रद होती है । इस अवस्था में मानव के कोमल निर्मल अन्तकरण में पावन-अपावन जैसा भी सन्निविष्ट किया जाय वही आगे चलकर अंकुरित, पल्लवित, विकसित और फलित होकर क्रियान्वित होता है । वस्तुतः यह अवस्था समग्र अवस्थाओं में सर्वोपरि एवं परम महत्वपूर्ण अवस्था है । जिस अवस्था में संसार के समग्र प्रदूषित विकारों का उद्भव भी कथमपि सम्भव नहीं है । जगत्स्रष्टा ब्रह्मा के लोक विख्यात मानस पुत्र महर्षिवर्य चतुःसनकादिक सर्वदा इसी बाल रूप में ही लोक लोकान्तरों में अव्याहतगति से विचरण करते हैं । यद्यपि वे इस यावन्निखिल सृष्टि के समुद्भव से पूर्व ही पितामह ब्रह्मा के मानसी सृष्टि के ये आदिरूप महर्षि चतुःसनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार हैं जो अनवरत श्रीभगवद् गुणगाथा-सत्सङ्गपरायण रहते विचरते हैं ।

ये महर्षिवर्य अपने स्वसम्प्रदायाचार्य सुदर्शनचक्रावतार श्री निम्बार्क भगवान् के परमगुरु तथा देवर्षि नारद के उपदेष्टा गुरु हैं । निम्बार्क सम्प्रदाय श्रीसनकादि सम्प्रदाय से भी व्यवहृत की जाती है और इन लोकाचार्य चतुर्महर्षियों ने भगवान् श्रीहँस से ही परमात्मतत्त्व-जिज्ञासाजनित उपदेश प्राप्त कर शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वे-श्वर प्रभु की सेवा ग्रहण कर देवर्षिवर्य श्रीनारद को उसी दिव्यतत्त्व का भक्तिरस-

मय उपदेश पूर्वक श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान की और वही परमपावन उपदेश व श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अनिर्वचनीय सेवा श्रीनारदजी से श्रीनिम्बार्क भगवान् को सम्प्राप्त हुई । वस्तुतः श्रीसनकादि महर्षियों का स्वरूप ही अद्भुत लोक कल्याणकारी परमपावनतम है। वे प्रति-पल बालरूप में ही विचरण करते सम्पूर्ण जगत् का हित करते हैं ।

अतः यह बाल अर्थात् कौमार अवस्था उन्हें कितनी प्रिय लगती है जिसमें वे सर्वदा विद्यमान रहते परम रसानुभूति करते हैं, यों तो वे समग्र-सृष्टि के आदि पुरुष वृद्धो के भी परम वृद्ध हैं किन्तु रहते हैं सदा बालरूप में एतावता बालस्वरूप की कितनी महिमा का यहाँ प्रख्यापन किया जाय, यथार्थ में यह अवस्था परम सात्त्विक, शुद्ध, पवित्र है । इस अवस्था में जैसा भी सन्निवेश किया जाय प्रतिबिम्बित होता है सुतरां यह अवस्था इसीलिये श्रेष्ठतम मानी गई है ।

इस परम निर्मल स्वच्छ अवस्था में बालक को जिस दिशा में अभिहित किया जाय वह उसमें परम कौशल प्राप्त कर लेता है, अतः उसकी दिशा ही सर्वोत्तम व्यवस्थित सात्त्विक मर्यादित होनी चाहिये इसी विशुद्ध भाव से छात्र-विवेक-दर्शन ग्रन्थ की साम्प्रतिक समय में आवश्यकता उपयुक्त समझी गई । यद्यपि बाल शिक्षा सम्बन्धी पर्याप्त साहित्य विद्यमान है तथापि एक ही स्थल पर समवेत स्वरूप दर्शन हेतु जो स्वकीय मानस में भाव जागृत हुआ तदनुरूप यह लघु-पुस्तिका के रूप में संकलित कर लिया गया, यह अति स्वल्प समय में ही स्फुरित एवं लिपिबद्ध कर लिया गया जिसे समुचित समझ कर पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया गया ।

इसका प्रकाशन भक्तवर श्रीब्रजमोहनजी नटवरगोपालजी छापरवाल ने स्वर्गीय कु० माधवी के मंगलमयी स्मृति में कराया है । माधवी अति मेधावी सरल-सौम्य श्रीयुगलसेवापरायण सुशिक्षित बालिका थी । दैवयोगवशात् उसका आकस्मिक निधन हो गया था। परम भक्तिनिष्ठ श्रीव्रजमोहनजी छापरवाल ने श्रीसर्वेश्वर प्रभु के विधान को मंगलरूप मानकर सन्तोष रखा । वस्तुतः इनकी आचार्यपीठ में होने वाली विभिन्न सतत सेवायें आदर्शपूर्ण हैं ।

यदि इस प्रस्तुत-पुस्तक से बालक-बालिकाओं, छात्र-छात्राओं का कुछ भी हित हुआ तो हम अपनी इस लेखनी से समङ्कित विचारों को सार्थक व चरितार्थ मानेंगे । प्रशिक्षक मेधावी विद्वन्महानुभावों को लघुकलेवर स्वरूप यह ग्रन्थ कैसा उपादेय लगे अपने पावन विचार-मङ्गल भाव अवश्य ही अभिव्यक्त करते हुए जो भी संशोधन हो प्रेषित करें उसको अग्रिम संस्करण में संलग्न करने का प्रयास करेंगे। अन्त में सर्वनियन्ता अनुग्रहविग्रह युगलविहारी भगवान् श्रीराधामाधव सर्वेश्वर प्रभु से मुहुर्मुहुः यही अभिवांछा करते हैं किसी भी मंगलमयी विधा से पावन सरणि से आपके श्रीयुगलपदकमलों में निर्हैतुकी अनन्य अनुरक्ति पराभक्ति अविरल रूप में अस्मन्मानस में सुस्थिर रहे बस यही एकमात्र स्पृहा है ।

सर्वे कुशलिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ।।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

छात्र-विवेक-दर्शन की अकारादि क्रम से

* दोहा - सूची *

क्र. सं.	दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
	अ		
१	अपने अवगुण ध्यान कर	२२३	३४
२	अभिवांछित जल पान हो	८	५
३	अपने घर में तुलसी की	२४	५
४	अतीव द्रुत अतिमन्दता	३८	७
५	अहिंसा व्रत अनुपालन	६४	११
६	अश्लील नाटक-नाटिका	८४	१३
७	अहंकार अतिघातक है	८६	१४
८	अपने अवगुण सतत तज	६२	१५
९	अतिथि सेवा परम धर्म	११५	१८
१०	अपने सहोदर भ्रात का	११७	१८
११	अपने निवास-कक्ष में	१६८	२६
१२	अपने घर में परस्पर	१६१	२६
१३	अज्ञात जन का ज्ञान कर	१६८	३०
१४	अर्जित विद्या-कला का	१६६	३०
१५	अपने-अपने धर्म में	२३१	३५
१६	अपने सुन्दर ज्ञान को	२०८	३१
	आ		
१७	आमिष-अण्डा आसुरी	१५	४
१८	आपस में अश्लील शब्द	२७	५
१९	आलस तज रिपुरूप है	३६	७

क्र. सं. दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
२०-आदित्य-दर्शन पूर्व ही	१४८	२३
२१-आपस में यदि हो विवाद	१६९	२६
२२-आश्रम-वर्ण व्यवस्था का	२३०	३५
इ		
२३-इत-उत डोले व्यर्थ में	२२४	३४
२४-इस रसना हित जो मनुज	१०१	१६
उ		
२५-उपद्रव अति हीन कर्म	२२२	३३
२६-उत्तम मासिक-पत्रिका	८६	१४
ऐ		
२७-ऐसे सद्-गुरु शरण हो	९५	१५
२८-ऐसी पावन वन्दना	१९०	२९
२९-ऐसा सुन्दर कार्य हो	२११	३२
क		
३०-कलह संघर्ष छोड़कर	२१९	३३
३१-करुणा-दया को चित्त धर	१४	३
३२-कभी किसी का भूलकर	४२	७
३३-कदाचित् दुःखद वृत्त हो	५७	१०
३४-कभी न कोलाहल करैं	६०	१०
३५-करो पाठ की आवृत्ति	७८	१३
३६-कथा सुनो हरि भक्त की	९३	१५
३७-कलियुग में हरिनाम से	१२०	१९
३८-कदाचिदस्मत्प्रकथन में	२०७	३१
३९-कर्तव्य बोध की शुभ निधि	२१५	३२
का		
४०-काल गति अवलोकन विधि	२१४	३२

क्र. सं.	दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
	के		
४१-	केवल बैठे मत रहो	१२१	१९
	क्रू		
४२-	क्रूर वचन बोलो नहीं	८२	१३
	गु		
४३-	गुटका-बीड़ी-चाय से	१२	३
	गो		
४४-	गो-विप्र-विद्वान् की	४०	७
४५-	गोपय-दधि-घृत-तक्र का	५०	९
४६-	गो-गरिमा का ध्यान हो	११६	१८
४७-	गायत्री प्रतिदिन जपो	१४०	२२
	ग्र		
४८-	ग्रन्थ-बाहुल्य विविधता	२०६	३१
	गृ		
४९-	गृह-शिक्षा संस्कार दृढ़	२०३	३१
	च		
५०-	चलचित्रों का त्याग शुभ	२१	४
५१-	चञ्चल मन निग्रह करो	३४	६
५२-	चन्द्रमौलि शिव-अर्चना	१२७	२०
५३-	चरणामृत का पान कर	१४४	२२
	छा		
५४-	छात्र धर्म अतिश्रेष्ठ है	१२९	२०
५५-	छात्रालय की शुद्धि का	२५४	२४
५६-	छात्रालय में कोलाहल	१५५	२४
५७-	छात्रालय में खेलना	१६२	२५
५८-	छात्र हितार्थ प्रतिपादित	१७१	२६

क्र. सं. दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
५९-छात्रा भी अपना समय	१७६	२७
६०-छात्रा का यह धर्म है	१८०	२७
६१-छात्र-छात्रा सहशिक्षा	१८३	२८
६२-छात्रा का कर्तव्य यह	१८५	२८
६३-छात्रा का अति मृदु हृदय	१८७	२८
६४-न विनोद हो छात्र संग	१९२	२९
६५-छात्र-छात्रा आवश्यक	१९५	३०
६६-छात्रों के हित में सदा	२००	३१
६७-छात्रवर्ग का हृदय से	२११	३२
ज		
६८-जन्मभूमि का मान कर	२९	६
६९-जब भी भोजन शुद्ध जल	५१	९
७०-जलक्रीड़ा शुभकर नहीं	८१	१३
७१-जन्म-जन्म के पुण्य-पुञ्ज	१११	१७
७२-जन्मभूमि अतिश्रेष्ठ है	१२३	१९
जू		
७३-जूवा-चौपड़-तास का	२२	५
जो		
७४-जो अपने निज कर्म में	३	३३
७५-जो आतुर-सेवा निरत	२०	४
७६-जो छात्रा अध्ययन कर	१८१	२८
७७-जो विधान प्रभु ने रचा	२३३	३५
त		
७८-तस्कर-वञ्चक कर्म का	११४	१८
ति		
७९-तिलक-कंठी धारण करे	१८	४

क्र. सं. दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
तु		
८०-तुलसी-पादप पूज नित	८०	१३
द		
८१-दन्त-शुद्धि नित स्नान हो	५	२
८२-दया भाव सब जीव पर	६२	१०
दि		
८३-दिनचर्या का ध्यान हो	४८	८
दी		
८४-दीन-दुःखी-असहाय जन	१	३३
८५-दान-दुःखी सेवा करो	१३	३
दु		
८६-दुर्व्यसनों का त्याग हो	११	३
दे		
८७-देवनागरी लिपी का	७१	१२
८८-देख-देख कर पैर रख	७९	१३
दै		
८९-दैनिक प्रणायाम हो	६	२
ध		
९०-धर्म रहित जो राजनीति	२२६	३४
ना		
९१-नाना विकृत पेय द्रव्य	२८	५
९२-नाना चिन्ता त्याग कर	५८	१०
९३-नारी लक्ष्मी रूप है	२०१	३०
नि		
९४-नियमित मर्दन तैल का	४	२
९५-निज मनमानी जो करै	२५	५

क्र. सं. दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
९६-निरर्थक वार्तालाप में	४७	८
९७-निजी वस्तु को देख कर	५३	९
९८-निज राष्ट्र का दायित्व भी	१८२	२८
९९-न्यायाधीश-अधिनियम	२१६	३३
प		
१००-परामर्श कर कार्य को	२६	५
१०१-पर-निन्दा पर-दोष से	४१	७
१०२-परम्परा आदर करो	६६	११
१०३-परवस्तु परद्रव्य का	९१	१४
१०४-पशु-पक्षी हित दान कर	९८	१५
१०५-पता नहीं किस रूप में	१२२	१९
१०६-पञ्च-वादन वेला में	१३३	२१
१०७-पवित्र मृत्तिका कर-शुद्धि	१३६	२१
१०८-परीक्षा में कारणवश	१६३	२५
१०९-पठनादि कर्तव्य कार्य	१७५	२७
११०-पवित्रता गृह में भली	१९३	२९
पु		
१११-पुनःपरिश्रम स्वाध्याय	१६४	२५
११२-पुण्य तीर्थ अरु धाम का	२००	३०
पै		
११३-पैन्ट-पजामा आधुनिक	१६०	२५
प्र		
११४-प्रतिदिन प्रभातकाल में	१	२
११५-प्रभात वेला ऊठ कर	२	२
११६-प्रभु कृपा से जो मिलै	५६	९
११७-प्रभु पावन रसभक्ति में	५९	१०

क्र. सं. दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
११८-प्रणति पुरस्सर मान कर	९६	१५
११९-प्रवचन-लेखन-वाचन का	१०६	१७
१२०-प्रभु-कृपा ही मूल है	११९	१८
१२१-प्रभु-प्रसादी-तुलसी को	१५१	२३
१२२-प्रस्तुत-पुस्तक को पढ़ो	१७४	२७
१२३-प्रस्तुत इस लघु ग्रन्थ में	१८६	२८
ब		
१२४-बड़े भाग्य से भारत में	१२५	१९
१२५-बल-विद्या-मति-भक्ति को	१८९	२९
बा		
१२६-बाल रूप में जो छात्रा	१७९	२७
बि		
१२७-बिना भूख भोजन करै	५२	९
ब्र		
१२८-ब्रह्मचर्य व्रत से रहो	१९	४
भ		
१२९-भव-बन्धन अति प्रबल है	१०८	१७
१३०-भव्य भारतवर्ष की	१२४	१९
भा		
१३१-भारत-वसुधा मनुज तन	७२	१२
१३२-भागवत-गीता पाठ कर	९७	१५
१३३-भारत-माता वन्दन कर	१३०	२०
१३४-भारत-वसुधा भाग्य से	२२७	३४
भू		
१३५-भूला-भटका जो मिलै	१०५	१६

क्र. सं.	दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
	म		
१३६	मन को विचलित मत करो	८७	१४
१३७	मध्याह्न-प्रसाद के प्रथम	१४६	२३
१३८	मल्लविद्या-योगासन	१६७	२६
१३९	मर्यादा पालन करो	१७७	२७
१४०	महा विकट इस भव-वन में	१९७	३०
१४१	मृत्यु अवश्यम्भावी है	२२५	३४
	मा		
१४२	मातृ-पितृ-गुरुजन चरण	१०	३
१४३	मातृशक्ति का मान कर	४४	८
१४४	मातृभाषा हिन्दी है	७३	१२
१४५	मात्र इंग्लिश अभिज्ञ है	७५	१२
१४६	मातृ-पितृ-अभिभावकजन	२०२	३१
१४७	माता-पिता-गुरुजन-कवि	२१३	३२
	य		
१४८	यदि कदाचित् अवहेलन	१७२	२६
	व		
१४९	व्यर्थ कल्पना मत करो	१०४	१६
१५०	व्यर्थ विवाद में न पड़ो	१६१	२५
१५१	वर्णन किया संक्षेपतः	१७०	२६
१५२	वह शासक अतिश्रेष्ठ है	२२९	३४
	वा		
१५३	वाणी में अतिमधुरता	५४	९
१५४	वाङ्मय-स्वाध्याय तप	१५८	२४
	वि		
१५५	विकृति हिप्पी-केशपाश	३२	६

क्र. सं.	दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
१५६-	विविध कला शुभ काव्य का	३३	६
१५७-	विमल भाव भर चित्त से	१०९	१७
१५८-	विद्यालय में वन्दना	१४५	२२
१५९-	विद्यालय अवकाश पर	१४७	२३
१६०-	विद्यालय अवकाश दिन	१५६	२४
१६१-	विविध कला का बोध हो	१६५	२५
१६२-	विदुषी माता हितप्रदा	१८४	२८
	वृ		
१६३-	वृथा आन्दोलन न करो	४३	८
	रा		
१६४-	राष्ट्र भक्ति से ओत-प्रोत	२३	५
१६५-	राजनैतिक प्रसंग में	८५	१४
१६६-	राधामाधव नाम रट	९९	१६
१६७-	राम-कृष्ण की बोलो जय	१२६	१९
१६८-	राधामाधव युगलवर	१३४	२१
१६९-	राधामाधव मन्दिर में	१४३	२२
१७०-	रात्रि के दश-वादन में	१५३	२४
१७१-	रामराज्य की स्थापना	२२८	३४
१७२-	राष्ट्र-नायक राष्ट्र का	२१७	३३
	स		
१७३-	सर्वेश्वरं प्रणम्याऽथ	१	१
१७४-	समुचित क्रीड़ा सुभग है	९	३
१७५-	संध्या-वेला में पठन	३०	६
१७६-	समय-समय पर शरीर से	३५	६
१७७-	सम्पूर्ण मातृशक्ति का	४५	८
१७८-	सहपाठी सहपाठ का	४६	८

क्र. सं.	दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
१७९	-स्वच्छ वस्त्र धारण करो	४९	८
१८०	-सत्य वचन पालन करै	५५	९
१८१	-स्वीय-हस्त सुलेखन का	६७	११
१८२	-संस्कृत देववाणी है	६८	११
१८३	-सत्कार्यों में अर्थ का	७६	१२
१८४	-सरस्वती वन्दन करो	७७	१२
१८५	-सर्वभूत हिते रताः का	९०	१४
१८६	-संघटन करके रहो	१०३	१६
१८७	-सही मार्ग पर जो चले	११०	१७
१८८	-सन्तवेश में धूर्तजन	११३	१८
१८९	-सभी देव परिसेव्य हैं	१२८	२०
१९०	-सरस्वती अभिवन्दना	१३१	२०
१९१	-सरस्वती नितवन्दना	१३५	२१
१९२	-सदाचार के नियमों का	१३७	२१
१९३	-सन्ध्यावन्दन नित्य हो	१३९	२२
१९४	-सरस्वती नित अर्चना	१४१	२२
१९५	-सर्वेश्वर अभिषेक में	१४२	२२
१९६	-सरस्वती की सायं में	१४९	२३
१९७	-समय-समय पर आयुर्वेद	१६६	२५
१९८	-सभी प्राणी सुखमय रहें	१७३	२६
१९९	-संयमित-सात्विक-सरलता	१८८	२९
२००	-स्वास्थ्य रक्षा परम हित	१९४	२९
२०१	-सदैव समुचित कार्यों में	१९६	३०
	सा		
२०२	-सायं आरती-दरश हो	१५०	२३

क्र. सं. दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
सु		
२०३-सुगम भाषयाऽऽबद्धं	२	१
२०४-सुभग समय को सहज में	१६	४
२०५-सुप्रभात में हरि मन्दिर	३१	६
२०६-सुभग श्रेष्ठतम कार्य हो	६५	११
श		
२०७-शरीर-शुद्धि का ध्यान हो	३	२
२०८-शत्रुदल से सावधान	१०२	१६
२०९-शयन-आरती होने पर	१५२	२३
शा		
२१०-शास्त्रादि अनुशीलन सह	२२१	३३
२११-शारदा श्रीसरस्वती	१००	१६
२१२-शास्त्रों में मातृशक्ति की	१७८	२७
२१३-शासक-शिक्षक-विज्ञजन	२०४	३१
शि		
२१४-शिखा-सूत्र धारण रखे	६१	१०
२१५-शिक्षक-सद्गुरु शुभ आज्ञा	१५७	२४
शु		
२१६-शुभकर्मों में निरत जो	८८	१४
२१७-शुद्ध स्वच्छ सूती वसन	१५९	२४
शौ		
२१८-शौचशुद्धि-कर-शुद्धि कर	१३८	२१
ह		
२१९-हडबड-हडबड मत करो	३७	२१
२२०-हरित सुन्दर तरु-लता	६३	१०

क्र. सं. दोहा	दोहा सं.	पृष्ठ सं.
२२१-हरिचर्चा नियमित भली	१०७	१७
हि		
२२२-हिन्दी भाषा बोध कर	६९	११
२२३-हिन्दी अंक लेखन का	७०	११
२२४-हिन्दु-संस्कृति पालन हो	७४	१२
श्र		
२२५-श्रम-आसन नियमित करैं	७	२
श्रा		
२२६-श्राद्धकर्म-तर्पण करैं	८३	१३
श्रे		
२२७-श्रेष्ठ-सुधी बन ज्ञान का	९४	१५
२२८-श्रेष्ठ मित्र का संग कर	११८	१८
२२९-श्रेष्ठ प्रशासक है वही	२१०	३२
श्री		
२३०-श्रीहरि पावन-शुभ कथा	१७	४
२३१-सन्ति-राधासर्वेश्वर	१३२	२१
२३२-श्रीहरि मन्दिर देवस्थान	२३२	३५
२३३-श्रीमद्धर्माचार्यवृन्द	२०९	३२
श्रौ		
२३४-श्रौत सनातन धर्म का	३९	७
त्रि		
२३५-त्रिविध-ताप से सब दुःखी	११२	१७

*

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री श्रीजी महाराज

प्रणीत--

छात्र-विवेक-दर्शन

(१)

सर्वेश्वरं प्रणम्याऽथ वाग्देवीञ्च सरस्वतीम् ।
परमाऽऽचार्यनिम्बार्कं स्मृत्वा गुरोः पदाम्बुजम् ॥

(२)

सुगमभाषयाऽऽबद्धं छात्रमङ्गलसम्प्रदम् ।
विरच्यते विवेकार्थं छात्र--विवेक--दर्शनम् ॥

(१)

प्रतिदिन प्रभातकाल में, नियमित ऊठे श्रेष्ठ ।
वही छात्र अति उत्तम है, “शरण” सुमङ्गल प्रेष्ठ ॥

(२)

प्रभात वेला ऊठ कर, दैनिक प्रभु का ध्यान ।
करो वन्दना भाव भर, “शरण” शास्त्र का ज्ञान ॥

(३)

शरीर-शुद्धि का ध्यान हो, सदाचार-अनुसार ।
पाठ्य-ग्रन्थ स्वाध्याय नित, “शरण” ज्ञान संचार ॥

(४)

नियमित मर्दन तैल का, विहित वार अनुसार ।
स्वदेश वेषभूषा हो, “शरण” चित्त अवधार ॥

(५)

दन्त-शुद्धि नित स्नान हो, नियमित हो व्यायाम ।
नित्यकर्म श्रीहरिभजन, “शरण” करैं निष्काम ॥

(६)

दैनिक प्राणायाम हो, दिनचर्या अति शुद्ध ।
प्रवचन-लेखन रुचि रहे, “शरण” चित्त अवरुद्ध ॥

(७)

श्रम-आसन नियमित करै, स्वस्थ रखे निज अङ्ग ।
सात्विक भोजन उचित हो, “शरण” लहै सत्सङ्ग ॥

(८)

अभिवांछित जल पान हो, व्रत--संयम--आचार ।
आवश्यक निद्रा भली, “शरण” यही आधार ॥

(९)

समुचित क्रीडा सुभग है, आलस तजै नितान्त ।
सद्-ग्रन्थों का मनन हो, “शरण” रखैं मन शान्त ॥

(१०)

मातृ-पितृ-गुरुजन चरण, करो सश्रद्ध प्रणाम ।
उनकी सेवा श्रेयप्रद, “शरण” छात्र शुभ काम ॥

(११)

दुर्व्यसनों का त्याग हो, सत्पुरुषों का मान ।
आलस तज स्वाध्यायरत, “शरण” छात्र गुणवान ॥

(१२)

गुटका - बीड़ी - चाय से, रहो सदैव सुदूर ।
मद्यादि अति घातक हैं, “शरण” त्याग भरपूर ॥

(१३)

दीन - दुखी सेवा करो, प्यासे को जलदान ।
भूखे को भोजन भला, “शरण” सदा अवधान ॥

(१४)

करुणा - दया को चित्त धर, सदा करो उपकार ।
यह मानव - कर्तव्य है, “शरण” छात्र अवधार ॥

(१५)

आमिष - अण्डा आसुरी, दुरित कर्म पहिचान ।
इनसे अतिशय दूर हो, तजो “शरण” अज्ञान ।।

(१६)

सुभग समय को सहज में, कभी न करता व्यर्थ ।
वही छात्र मतिमान है, “शरण” सुयोग्य समर्थ ।।

(१७)

श्रीहरि पावन - शुभ कथा, श्रवण करै कर ध्यान ।
निश्चय उसकी विमल मति, “शरण” योग्य सन्मान ।।

(१८)

तिलक - कंठी धारण करै, इष्ट - मन्त्र का जाप ।
वही छात्र अतिश्रेष्ठ है, “शरण” बने निष्पाप ।।

(१९)

ब्रह्मचर्य व्रत से रहो, सच्चरित्र गुणवान ।
जीवन अति आदर्श हो, “शरण” परम महान ।।

(२०)

जो आतुर - सेवा निरत, उच्चकर्म संलग्न ।
काम-क्रोध से रहित हो, “शरण” वही अभिमग्न ।।

(२१)

चलचित्रों का त्याग शुभ, भजिये राधाकृष्ण ।
दूरदरश - अश्लील दृश्य, “शरण” तजो यह तृष्ण ।।

(२२)

जूवा-चोपड-तास का, खेल अनेक निकृष्ट ।
इन्हें तजो मतिमान हो, "शरण" वृथा आकृष्ट ॥

(२३)

राष्ट्र भक्ति से ओत-प्रोत, जीवन हो प्रति-छात्र ।
यह अवसर अतिशय सुभग, "शरण" तभी सत्पात्र ॥

(२४)

अपने घर में तुलसी की, पूजा करिये रोज ।
दीप दान नित जल सेचन, "शरण" मिलै ध्रुव ओज ॥

(२५)

निज मनमानी जो करै, सदा परम अशान्त ।
कभी न उसे सुख-सम्पदा, "शरण" पूर्ण वह भ्रान्त ॥

(२६)

परामर्श कर कार्य को, करै जो उत्तम जान ।
श्रेष्ठ - पुरुष के वचन पर, "शरण" आचरण मान ॥

(२७)

आपस में अश्लील शब्द, गाली वृथा प्रयोग ।
करना असंगत सर्वथा, "शरण" दुःखद यह रोग ॥

(२८)

नाना विकृत पेय द्रव्य, सतत अहितकर जान ।
इनका सेवन न करो, "शरण" सत्य को मान ॥

(२६)

जन्मभूमि का मान कर, इसका सुयश अपार ।
इस हेतु तत्सेवा का, “शरण” दान संचार ॥

(३०)

सन्ध्या - वेला में पठन, वर्जित शास्त्र विचार ।
भगवद्दर्शन सायं कर, “शरण” विमल चित धार ॥

(३१)

सुप्रभात में हरि मन्दिर, नित प्रभु - दर्शन जाय ।
श्रीचरणामृत पान कर, “शरण” कीरतन गाय ॥

(३२)

विकृत हिप्पी केशपाश, रखना अशोभनीय ।
पाश्चात्य अनुकृति सर्वथा, तजदो “शरण” तदीय ॥

(३३)

विविध कला शुभ काव्य का, करो सतत अवबोध ।
जिससे जीवन श्रेष्ठ हो, “शरण” वरण अक्रोध ॥

(३४)

चञ्चल मन निग्रह करो, मति को माधव ध्यान ।
आत्मा को अध्यात्मरत, “शरण” करो अवभान ॥

(३५)

समय-समय पर शरीर से, करैं छात्र श्रमदान ।
इससे समुचित कार्य भी, “शरण” बने दृढ़वान ॥

(३६)

आलस तज रिपुरूप है, दीर्घसूत्रिता छोड़ ।
प्रपठन में अतिमन्दता, “शरण” तजो मन दोड़ ॥

(३७)

हडबड-हडबड मत करो, हडबड खडबड होय ।
धीरज धर कारज करो, “शरण” सुखास्पद जोय ॥

(३८)

अतीव द्रुत अतिमन्दता, उभयविध है प्रतिकूल ।
स्वभाविक समुचित गति, “शरण” वही अनुकूल ॥

(३९)

श्रौत सनातन धर्म का, परिपालन कर्तव्य ।
सर्वेश्वर निज इष्ट में, भाव “शरण” वर्धव्य ॥

(४०)

गो -विप्र - विद्वान् की, सेवा में अनुरक्त ।
वृद्धजनों की चर्या से, “शरण” बनो हरिभक्त ॥

(४१)

पर - निन्दा पर - दोष से, बचे रहो धीमान ।
सद्गुरु अवधारण करो, “शरण” मिलै सन्मान ॥

(४२)

कभी किसी का भूल कर, मत करो अपमान ।
जो जन का आदर करै, “शरण” परम कल्यान ॥

(४३)

वृथा आन्दोलन न करो, जिससे होय विकार ।
उससे अतिशय दूर शुभ, “शरण” शान्ति अवधार ।।

(४४)

मातृशक्ति का मान कर, यह है उत्तम कार्य ।
उनकी सेवा में सदा, “शरण” भक्ति अनिवार्य ।।

(४५)

सम्पूर्ण मातृशक्ति का, आदर कर सम्मान ।
छात्रा प्रति हो समदृष्टि, “शरण” छात्र सद् - ज्ञान ।।

(४६)

सहपाठी सहपाठ का, अस्वस्थ का सहयोग ।
परस्पर में सौजन्य का, “शरण” परम सुयोग ।।

(४७)

निरर्थक वार्तालाप में, समय करो मत नष्ट ।
सात्विक - पुस्तक पठन से, “शरण” ज्ञान सुस्पष्ट ।।

(४८)

दिनचर्या का ध्यान हो, अनुसेवन अनिवार्य ।
इससे मन निर्मल बने, “शरण” उचित यह कार्य ।।

(४९)

स्वच्छ वस्त्र धारण करो, मर्यादा अनुकूल ।
पवित्र विचार से पढ़ो, “शरण” करै ना भूल ।।

(५०)

गोपय-दधि-घृत-तक्र का, नियमित करो प्रयोग ।
भोजन सात्विक सुभग हो, “शरण” निजाङ्ग निरोग ।।

(५१)

जब भी भोजन शुद्ध जल, करो भूमि पर बैठ ।
खड़े रूप या भ्रमण में, “शरण” उचित नहि पैठ ।।

(५२)

बिना भूख भोजन करै, पावै कष्ट अनेक ।
उदर - कष्ट से हो दुःखी, “शरण” विदित प्रत्येक ।।

(५३)

निजी वस्तु को देख कर, रखे व्यवस्थित रूप ।
वही छात्र धीमान है, “शरण” सरणि - अनुरूप ।।

(५४)

वाणी में अतिमधुरता, परम सरल स्वभाव ।
सेवा में अभिरत रहे, “शरण” छात्र - प्रभाव ।।

(५५)

सत्यवचन पालन करै, मिथ्या से अति दूर ।
विनम्रभाव से कर्मरत, “शरण” सुखी भरपूर ।।

(५६)

प्रभु कृपा से जो मिलै, उसमें अतिसन्तुष्ट ।
वही सुखी गुणवान है, “शरण” पूर्ण परिपुष्ट ।।

(५७)

कदाचित दुःखद वृत्त हो, व्याकुलता नहि लाय ।
निज मानस में धैर्य रख, "शरण" कृपा प्रभु पाय ॥

(५८)

नाना चिन्ता त्याग कर, समय श्रेष्ठ उपयोग ।
यह कर्तव्य अभीष्ट हो, "शरण" वदत बुधलोग ॥

(५९)

प्रभु पावन रसभक्ति में, जो अभिरत है छात्र ।
हरि - गुरु कृपाभाजन वह, "शरण" परम प्रियपात्र ॥

(६०)

कभी न कोलाहल करैं, रहे सर्वदा शान्त ।
मृदु-मिद्-भाषी कर्मनिष्ठ, "शरण" सुयश भुविप्रान्त ॥

(६१)

शिखा - सूत्र धारण रखे, करै वेद का पाठ ।
विप्र छात्र कर्तव्य है, "शरण" उसे सब ठाठ ॥

(६२)

दया भाव सब जीव पर, गोमाता परिपाल ।
ऐसे निर्मल छात्र गुण, "शरण" लखैं गोपाल ॥

(६३)

हरित सुन्दर तरु - लता, छेदन अनुचित कार्य ।
इनका अभिरक्षण करो, "शरण" हृदय सन्धार्य ॥

(६४)

अहिंसा व्रत अनुपालन, करैं समादर प्राणि ।
दुर्भाव से रहित होय, “शरण” मधुर वद वाणि ॥

(६५)

सुभग श्रेष्ठतम कार्य हो, भला सभी का होय ।
आत्म निरीक्षण आवश्यक, “शरण” अज्ञता धोय ॥

(६६)

परम्परा आदर करो, वैष्णवता अनुकूल ।
मर्यादा अनुसार हो, “शरण” वासना भूल ॥

(६७)

स्वीय - हस्त सुलेखन का, नित्य करैं अभ्यास ।
नियमित लेखन विनिश्चय, “शरण” शब्द-विन्यास ॥

(६८)

संस्कृत देववाणी है, उसे पढ़ो दिन - रात ।
जिसमें ज्ञान - विज्ञान है, “शरण” सुमंगल बात ॥

(६९)

हिन्दी भाषा बोध कर, सत् - साहित्य अपार ।
व्रजभाषा अति मधुर है, “शरण” ज्ञान संचार ॥

(७०)

हिन्दी - अङ्क लेखन का, अभ्यास परम नितान्त ।
इसमें कभी न भूल हो, “शरण” सुलेख निशान्त ॥

(७१)

देवनागरी लिपी का, शुद्ध सुलेखन ध्यान ।
भारत वसुधा जन्म लै, "शरण" आवश्यक ज्ञान ॥

(७२)

भारत - वसुधा मनुज तन, पाकर क्यों अज्ञान ।
हिन्दी भाषा विज्ञता, "शरण" अङ्क पहचान ॥

(७३)

मातृभाषा हिन्दी है, तदङ्क - लेखन बोध ।
परम अनिवार्य कार्य है "शरण" सुधी - मत शोध ॥

(७४)

हिन्दु - संस्कृति पालन हो, परम्परा - अनुसार ।
इसका महत्व गौरवमय, "शरण" शास्त्र आधार ॥

(७५)

मात्र इंग्लिश अभिज्ञ है, संस्कृत - ज्ञान राहित्य ।
अतः संस्कृत स्वाध्याय हो, "शरण" विपुल साहित्य ॥

(७६)

सत्कार्यों में अर्थ का, जो करता उपयोग ।
वही छात्र वरणीय है, "शरण" मुदित सब लोग ॥

(७७)

सरस्वती वन्दन करो, अर्चन शास्त्र विधान ।
उनके कृपा - प्रसाद से, "शरण" मिलै प्रज्ञान ॥

(७८)

करो पाठ की आवृत्ति, प्रतिदिन नियमित रूप ।
ग्रन्थ मनन भी आवश्यक, "शरण" विवेक अनूप ॥

(७९)

देख - देख कर पैर रख, जल पीवो नित छान ।
सत्य वचन मन शुद्ध हो, "शरण" शास्त्र का ज्ञान ॥

(८०)

तुलसी - पादप पूज नित, बैठ निम्ब - तरु छाय ।
त्रिविध-ताप निश्चय शमन, "शरण" नियम दृढ़ाय ॥

(८१)

जलक्रीडा शुभकर नहीं, करो यथाविध स्नान ।
सरित - सरोवर, शुद्ध जल, "शरण" निमज्जन-पान ॥

(८२)

क्रूर वचन बोलो नहीं, सदा मधुर - व्यवहार ।
नम्रता - प्रियवादिता, "शरण" आचरण धार ॥

(८३)

श्राद्धकर्म - तर्पण करैं, भास्कर अर्घ्य प्रदान ।
तीर्थयात्रा यथावसर, "शरण" सुकर्म विधान ॥

(८४)

अश्लील नाटक - नाटिका, अश्लील उपन्यास ।
अश्लील साहित्य न पढ़ै, "शरण" तभी सुख वास ॥

(८५)

राजनैतिक प्रसंग में, कदापि ना लैं भाग ।
दुष्कर्मों से दूर रह, "शरण" पठन अनुराग ॥

(८६)

उत्तम मासिक - पत्रिका, करो नित्य स्वाध्याय ।
जिससे शुभ शिक्षा मिलै, "शरण" बोध प्रकटाय ॥

(८७)

मन को विचलित मत करो, श्रीसर्वेश्वर ध्यान ।
जीवन उत्तम ध्रुव बनै, "शरण" पूर्ण अवधान ॥

(८८)

शुभकर्मों में निरत जो, उसको प्रिय फल लाभ ।
उसके अन्तर हरि बसै, "शरण" प्रफुल्लित आभ ॥

(८९)

अहंकार अतिघातक है, इसका करदो त्याग ।
विनयी सरल स्वभाव हो, "शरण" यही सद् - भाग ॥

(९०)

'सर्वभूत हिते रताः' का, वचन चित्त अवधार ।
एवंविध जीवन बने, "शरण" रुचिर विचार ॥

(९१)

पर वस्तु पर द्रव्य का, हरण घोर अपराध ।
इनसे अतिशय बच रहो, "शरण" वही निर्बाध ॥

(९२)

अपने अवगुण सतत तज, पर गुण नित्य निहार ।
निर्मल मति स्वाध्याय कर, "शरण" हृदय विहार ॥

(९३)

कथा सुनो हरि भक्त की, गोविन्द का गुणगान ।
परम धर्म कर्तव्य है, "शरण" सुपथ यह जान ॥

(९४)

श्रेष्ठ - सुधी बन ज्ञान का, दान पुण्यप्रद कार्य ।
सर्वेश्वर रसभक्ति को, "शरण" स्वान्त अवधार्य ॥

(९५)

ऐसे सद् - गुरु शरण हो, प्रभूभक्त विद्वान ।
सच्चरित्र मतिमान हो, "शरण" श्रेष्ठ गुणवान ॥

(९६)

प्रणति पुरस्सर मान कर, साधु - सन्त - विद्वान ।
वृद्धपुरुष हरिभक्तजन, "शरण" सहज गुण - ज्ञान ॥

(९७)

भागवत -गीता पाठ कर, रामायण - रसपान ।
हनुमत - चालीसा पठन, "शरण" नशत अज्ञान ॥

(९८)

पशु - पक्षी हित दान कर, अन्न-अम्बु-तृण दान।
परम पुण्यप्रद कार्य है, "शरण" सतत हिय ध्यान ॥

(९९)

राधामाधव नाम रट, जय - जय नित उच्चार ।
कथा श्रवण कर भागवत, "शरण" युगल हिय धार ॥

(१००)

शारदा श्रीसरस्वती, दिव्य ज्ञान रस कोष ।
समुपासित वरदायिनी, "शरण" सतत हिय तोष ॥

(१०१)

इस रसना हित जो मनुज, भोजन नहीं विचार ।
तन पावत परिताप वह, "शरण" उचित आहार ॥

(१०२)

शत्रुदल से सावधान, सतत रहो कटिबद्ध ।
बल-बुद्धि-श्रम-सम्पदा, संचय "शरण" सन्नद्ध ॥

(१०३)

संघटन करके रहो, दृढ़तम हो संकल्प ।
विघटन अतिघातक समझ, "शरण" सतर्क विकल्प ॥

(१०४)

व्यर्थ कल्पना मत करो, कर्मनिष्ठ हो नित्य ।
अप्रत्याशित प्रत्यवाय, शमन "शरण" आदित्य ॥

(१०५)

भूला - भटका जो मिलै, श्रेष्ठ बताओ मार्ग ।
छात्र मात्र को चाहिये, "शरण" चले सन्मार्ग ॥

(१०६)

प्रवचन-लेखन-वाचन का, सम्यक् हो अभ्यास ।
कविता-कौशलता मिलै, "शरण" पूर्ण विश्वास ॥

(१०७)

हरिचर्चा नियमित भली, तदनुकूल व्यवहार ।
इसका जो पालन करै, "शरण" श्रेष्ठता धार ॥

(१०८)

भव-बन्धन अति प्रबल है, जन्म-मरण पुनि होय ।
श्रीसर्वेश्वर भजन से, "शरण" विलय संजोय ॥

(१०९)

विमल भाव भर चित्त से, करिये पर उपकार ।
यह अत्युत्तम कार्य है, "शरण" तजो अपकार ॥

(११०)

सही मार्ग पर जो चले, निर्भय करत विहार ।
जन-मानस आदर करै, "शरण" उसे बलिहार ॥

(१११)

जन्म-जन्म के पुण्य-पुञ्ज, नर तन मिला महान ।
श्रेष्ठकर्म में यदि निरत, "शरण" तदा शुभ जान ॥

(११२)

त्रिविध-ताप से सब दुःखी, तभी सुखी वह होय ।
राधाकृष्ण भगवान् की, "शरण" भक्तिरत जोय ॥

(११३)

सन्तवेष में धूर्तजन, उनकी कर पहचान ।
उनके दुरित - आवर्त से, "शरण" दूर शुभमान ॥

(११४)

तस्कर - वञ्चक कर्म का, सदा रखो परिज्ञान ।
उनके झञ्झावात से, "शरण" पूर्ण अवधान ॥

(११५)

अतिथि - सेवा परम धर्म, अभ्यागत - सम्मान ।
सकल छात्र कर्तव्य है, "शरण" सहज वरदान ॥

(११६)

गो - गरिमा का ध्यान हो, गंगाजल का पान ।
गोविन्द - गीता गान कर, "शरण" कृपा भगवान ॥

(११७)

अपने सहोदर भ्रात का, कर आदर - सम्मान ।
परस्पर मिलकर रहो, "शरण" सर्वविध ध्यान ॥

(११८)

श्रेष्ठ मित्र का संग कर, श्रेष्ठ सन्त - उपेदश ।
श्रेष्ठ वस्तु का दान कर, "शरण" श्रेष्ठ निज देश ॥

(११९)

प्रभू - कृपा ही मूल है, तभी मिला नर देह ।
इसे प्राप्त कर अनवरत, "शरण" करो हरि - नेह ॥

(१२०)

कलियुग में हरिनाम से, होता जग - कल्याण ।
यह साधन अति सरल है, "शरण" मिले परित्राण ॥

(१२१)

केवल बैठे मत रहो, करो परिश्रम - कार्य ।
नियमित पदाति-भ्रमण से, "शरण" स्वस्थता धार्य ॥

(१२२)

पता नहीं किस रूप में, सर्वेश्वर मिल जाय ।
सबका आदर नित करो, "शरण" भूल दुःख पाय ॥

(१२३)

जन्मभूमि अतिश्रेष्ठ है, उसका हो सम्मान ।
तदर्थ विकाश कार्य हित, "शरण" साहाय्य दान ॥

(१२४)

भव्य भारतवर्ष की, विजय निरन्तर बोल ।
तद्रक्षण हित स्वयं के, "शरण" कर्म अवतोल ॥

(१२५)

बड़े भाग्य से भारत में, नरतन मिला महान ।
इसे प्राप्त कर सत्पथ में, चलो सतत मतिमान ॥

(१२६)

राम-कृष्ण की बोलो जय, जय-जय श्रीहनुमान ।
गंगा-यमुना बोल जय, "शरण" करो जय गान ॥

(१२७)

चन्द्रमौलि शिव - अर्चना, श्रीगणेश शुभ ध्यान ।
जिनके कृपांकटाक्ष से, "शरण" सुखास्पद मान ॥

(१२८)

सभी देव परिसेव्य है, स्वकीय इष्ट दृढ़ भाव ।
जिनकी मङ्गल दृष्टि से, "शरण" सुखद प्रभाव ॥

(१२९)

छात्र धर्म अतिश्रेष्ठ है, विद्यार्थी - समुदाय ! ।
भावी दायित्व आप पर, "शरण" सुभग यह काय ॥

(१३०)

भारत - माता वन्दन कर, श्रद्धायुत गुण गान ।
भारत के प्रिय पुत्र छात्र, "शरण" भजो भगवान ॥

(१३१)

सरस्वती अभिवन्दना, सरस्वती नित ध्यान ।
सरस्वती जय उच्चरत, "शरण" सरस्वती ज्ञान ॥

*

आचार्यपीठस्थ-विद्यालयीय छात्रों के लिये--

(१३२)

सन्ति -- राधासर्वेश्वर, -- छात्रालय के छात्र ।
विधिवत सुन्दर नियमों को, "शरण" निभावें पात्र ॥

(१३३)

पञ्च - वादन वेला में, ऊठो नित्य प्रभात ।
हस्त - मुख प्रक्षालन करो, "शरण" सुमंगल बात ॥

(१३४)

राधामाधव युगलवर, सर्वेश्वर कर ध्यान ।
प्रातःकालिक वन्दना, "शरण" सहज शुभ ज्ञान ॥

(१३५)

सरस्वती नित वन्दना, करके पढ़िये ग्रन्थ ।
पठित ग्रन्थ की आवृत्ति, "शरण" श्रेष्ठ यह पन्थ ॥

(१३६)

पवित्र मृत्तिका कर - शुद्धि, शौचशुद्धि के बाद ।
साबुन प्रयोग ना करें, "शरण" शास्त्र - मर्याद ॥

(१३७)

सदाचार के नियमों का, परिपालन अभ्यास ।
इससे पावन गुणवत्ता, "शरण" चरण विन्यास ॥

(१३८)

शौचशुद्धि-कर-शुद्धि कर, दन्तशुद्धि नित स्नान ।
तिलक-कंठी धारण रखे, "शरण" सिद्धासन ध्यान ॥

(१३९)
सन्ध्यावन्दन नित्य हो, दीक्षित मन्त्र सुजाप ।
आसन - प्राणायाम हो, "शरण" स्तोत्र आलाप ॥

(१४०)
गायत्री प्रतिदिन जपो, मन्त्रराज -- गोपाल ।
श्रीमन्मुकुन्द मन्त्र को, "शरण" जपो करमाल ॥

(१४१)
सरस्वती नित अर्चना, पूजा शालग्राम ।
करिये नियमित आरती, "शरण" उचित यह काम ॥

(१४२)
सर्वेश्वर अभिषेक में, नित्य उपस्थित होय ।
पुरुष-सूक्त का घोष हो, "शरण" सकल अघ धोय ॥

(१४३)
राधामाधव - मन्दिर में, शृङ्गार - आरती जाय ।
श्रीप्रभु स्तुति नित्य कर, "शरण" प्रणति फल पाय ॥

(१४४)
चरणामृत का पान कर, प्रभु - प्रसाद को पाय ।
विद्यालय में पठन हित, "शरण" समय पर जाय ॥

(१४५)
विद्यालय में वन्दना, करके पढ़ो अवधान ।
जब मध्य अवकाश हो, "शरण" प्रसाद कर आन ॥

(१४६)

मध्याह्न - प्रसाद के प्रथम, करो वेद का घोष ।
जय ध्वनि कर प्रसाद हो, “शरण” बनो निर्दोष ॥

(१४७)

विद्यालय अवकाश पर, क्रीडा हो छात्र ।
आवो समय पर खेलकर, “शरण” वही सत्पात्र ॥

(१४८)

आदित्य - दर्शन पूर्व ही, शरीर शुद्धि का कार्य ।
गोपीचन्दन का तिलक, “शरण” परम अनिवार्य ॥

(१४९)

सरस्वती की सायं में, करो आरती रोज ।
सायं - स्तुति-वन्दन कर, “शरण” हृदय गत मोज ॥

(१५०)

सायं आरती - दरश हो, मन्दिर श्रीभगवान ।
नियमित स्तुति करबद्ध कर, “शरण” दण्डवत मान ॥

(१५१)

प्रभु - प्रसादी - तुलसी को, लेकर बैठो शान्त ।
राधामाधव कीरतन, “शरण” करो अभ्रान्त ॥

(१५२)

शयन - आरती होने पर, करिये प्रभु परसाद ।
छात्रालय निज स्थान पर, “शरण” पाठ कर याद ॥

(१५३)

रात्रि के दश - वादन में, शयन-समय हो ध्यान ।
श्रुति-पुराण प्रिय पाठ हो, समुचित "शरण" विधान ।।

(१५४)

छात्रालय की शुद्धि का, दैनिक ध्यान विधान ।
शान्त-चित्त स्वाध्याय हो, "शरण" कार्य अवभान ।।

(१५५)

छात्रालय में कोलाहल, करना परम निषिद्ध ।
भगवत्प्रसाद काल में, "शरण" मौन व्रत सिद्ध ।।

(१५६)

विद्यालय - अवकाश दिन, गुरु - आज्ञा अनुसार ।
मन्दिर - परिसर शुद्धि हो, "शरण" कार्य अवधार ।।

(१५७)

शिक्षक - सद्गुरु शुभ आज्ञा, अनुपालन निज कर्म ।
जीवन उज्ज्वलतम बने, "शरण" छात्र का धर्म ।।

(१५८)

वाङ्मय - स्वाध्याय तप, मत समझो यह भार ।
उत्तमता उपलब्ध हो, "शरण" मिलै सुख-सार ।।

(१५९)

शुद्ध - स्वच्छ सूती वसन, निज - संस्कृति अनुसार ।
शुक्ल-पीत-सात्विक सुभग, "शरण" वस्त्र अवधार ।।

(१६०)

पैन्ट - पजामा आधुनिक, अधोवसन परिहार ।
धौत - बारहबन्दी हो, "शरण" कोपीन धार ॥

(१६१)

व्यर्थ विवाद में न पड़ो, निरर्थक वार्तालाप ।
सच्चारित्र्य धारण करो, "शरण" सुखास्पद आप ॥

(१६२)

छात्रालय में खेलना, मर्यादा विपरीत ।
सतत शान्त - कर्मठ बनो, "शरण" करो प्रभु-प्रीत ॥

(१६३)

परीक्षा में कारणवश, असफलता यदि होय ।
उसमें कदापि न अधीर, "शरण" ज्ञान संजोय ॥

(१६४)

पुनः परिश्रम स्वाध्याय, करो सफलता आय ।
श्रीसर्वेश्वर सुभग कृपा, "शरण" सहज होजाय ॥

(१६५)

विविध कला का बोध हो, जल-तैराकी ज्ञान ।
पाक-शास्त्र का बोध भी, "शरण" भला अवभान ॥

(१६६)

समय-समय पर आयुर्वेद, - शास्त्र चिकित्सा ज्ञान ।
संगीत शास्त्र का बोध भी, "शरण" भला अवभान ॥

(१६७)

मल्लविद्या - योगासन, स्वास्थ्य हितार्थ प्रयोग ।
शरीरश्रम भी आवश्यक, "शरण" विलय सब रोग ॥

(१६८)

अपने निवास - कक्ष में, ग्राम - गली - बाजार ।
प्रदूषण मत होने दो, "शरण" स्वच्छता धार ॥

(१६९)

आपस में यदि हो विवाद, मत करिये प्रतिकार ।
विद्यालय - प्राचार्य से, "शरण" सुनिर्णय धार ॥

(१७०)

वर्णन किया संक्षेपतः, सर्वेश्वर कर ध्यान ।
सरस्वती माता जनित, "शरण" छात्र सज्ज्ञान ॥

(१७१)

छात्र हितार्थ प्रतिपादित, समुचित शुद्ध विधान ।
इन अवहेलन ना करे, "शरण" पात्र सम्मान ॥

(१७२)

यदि कदाचित अवहेलन, समुचित दण्ड विधान ।
अभिभावक - प्राचार्यजन, "शरण" सुनिर्णय मान ॥

(१७३)

सभी प्राणि सुखमय रहें, सभी स्वस्थ परिपूर्ण ।
सभी सुष्ठुता युक्त हो, "शरण" नशत दुःख तूर्ण ॥

छात्राओं के लिये मननीय--

(१७४)

प्रस्तुत - पुस्तक को पढ़ो, जिसमें मिलै विवेक ।
छात्र - छात्रा अति हतिकर, "शरण" रखें प्रभु टेक ॥

(१७५)

पठनादि कर्तव्य कार्य, है वह परम समान ।
कार्य - क्षेत्र अतिभिन्न है, "शरण" उसे पहचान ॥

(१७६)

छात्रा भी अपना समय, शिक्षा में शुभ दान ।
गृहकार्य भी आवश्यक, "शरण" श्रेष्ठतम मान ॥

(१७७)

मर्यादा पालन करो, जीवन हो आदर्श ।
मात - पिता आज्ञा परक, "शरण" गहै अभिमर्श ॥

(१७८)

शास्त्रों में मातृशक्ति की, महिमा अमित अपार ।
तदनुकूल जीवन बनै, "शरण" यही सुख सार ॥

(१७९)

बाल रूप में जो छात्रा, आगे वही सुमात ।
माता की महिमा महा, "शरण" शास्त्र सुनात ॥

(१८०)

छात्रा का यह धर्म है, रहै सर्वदा सौम्य ।
सच्चारित्र्य - उत्तमता, "शरण" रूप है भौम्य ॥

(१८१)

जो छात्रा अध्ययन कर, करले परिणय जोय ।
उसका पातिव्रत्यधर्म, "शरण" श्रेष्ठतम होय ॥

(१८२)

निज राष्ट्र का दायित्व भी, मातृशक्ति पर होय ।
उसके शुभ उपदेश को, "शरण" वरण संजोय ॥

(१८३)

छात्र-छात्रा सहशिक्षा, कदापि समुचित नाहि ।
इसका अति विनिषेध हो, "शरण" सुधीजन चाहि ॥

(१८४)

विदुषी माता हितप्रदा, करती जग का श्रेय ।
वही प्राध्यापिका बने, "शरण" श्रेष्ठ हो ध्येय ॥

(१८५)

छात्रा का कर्तव्य यह, करै श्रेष्ठ व्यवहार ।
लज्जा ही शुभ भूषण है, "शरण" हृदय अवधार ॥

(१८६)

प्रस्तुत इस लघु-ग्रन्थ में, जो निर्दिष्ट विचार ।
छात्र-छात्रा हितकारी, "शरण" उचित हिय धार ॥

(१८७)

छात्रा का अति मृदु हृदय, मञ्जुल शील स्वभाव ।
यदि श्रीहरि विमल भक्तिरस, "शरण" असीम प्रभाव ॥

(१८८)

संयमित-सात्विक-सरलता, जीवन का उपहार ।
तदनुकूल शुभ आचरण, "शरण" सुमङ्गल धार ॥

(१८९)

बल-विद्या-मति-भक्ति को, सर्वेश्वर - विनियोग ।
जीवन निर्मल सहज हो, "शरण" मिटै भाव-रोग ॥

(१९०)

ऐसी पावन वन्दना, करो सरस्वती - मात ।
जिनकी मङ्गल दृष्टि से, "शरण" बनै सब बात ॥

(१९१)

अपने घर में परस्पर, कलह करो मत कोय ।
सरल भाव से सौहार्द, "शरण" सुभगतम होय ॥

(१९२)

न विनोद हो छात्र संग, कभी न हो उपहास ।
व्यर्थ वार्ता नहीं करो, "शरण" वृथा परिहास ॥

(१९३)

पवित्रता गृह में भली, करो अतिथि सत्कार ।
प्रतिदिन जल को छानकर, "शरण" करो व्यवहार ॥

(१९४)

स्वास्थ्य रक्षा परम हित, गोमाता नित पूत ।
गोपय-गोदधि संसेवन, "शरण" सदन जय कूज ॥

(१६५)

छात्र - छात्रा आवश्यक, कर्तव्य सतत निहार ।
करै न अर्थ दुरुपयोग, “शरण” प्रमुख विचार ॥

(१६६)

सदैव समुचित कार्यों में, करै अर्थ विनियोग ।
वृथैव अनुचित प्रसंग में, “शरण” कदा न प्रयोग ॥

(१६७)

महा विकट इस भव-वन में, नाना रूप अनेक ।
उनका विधिवत बोध कर, “शरण” सतर्क प्रत्येक ॥

(१६८)

अज्ञात जन का ज्ञान कर, तभी करै व्यवहार ।
बिना समझ सम्पर्क हो, “शरण” कष्ट संचार ॥

(१६६)

अर्जित विद्या - कला का, उचित - व्यक्ति को दान ।
तभी सफल है वह विद्या, “शरण” शास्त्र-मत ज्ञान ॥

(२००)

पुण्य तीर्थ अरु धाम का, सेवन करो सदैव ।
शुभ फल पावै सुनिश्चय, “शरण” गहै तदैव ॥

(२०१)

नारी लक्ष्मी रूप है, नारी देवी रूप ।
नारी शक्ति स्वरूपिणी, “शरण” प्रपूज्य स्वरूप ॥

(२०२)

मातृ-पितृ-अभिभावकजन, शिक्षक - प्रज्ञावान ।
निज-निज आत्मज को करैं, “शरण” सुशिक्षा दान ॥

(२०३)

गृह - कार्य संस्कार दृढ़, होवे पावन ज्ञान ।
निश्चय अतिशय श्रेष्ठ है, “शरण” मिलै सम्मान ॥

(२०४)

शासक-शिक्षक-विज्ञजन, करैं विवेक विचार ।
पाठ्य-ग्रन्थ में कठिनता, “शरण” शीघ्र परिहार ॥

(२०५)

छात्रों के हित में सदा, हो सुपाठ्य निर्धार ।
जिससे ग्रन्थ - सुबोधता, “शरण” सहज प्रसार ॥

(२०६)

ग्रन्थ - बाहुल्य विविधता, ग्रन्थ - ज्ञान निस्सार ।
व्युत्पत्ति व परिपक्वता, “शरण” दूर संचार ॥

(२०७)

कदाचिदस्मत्प्रकथन में, किञ्चित् मिलै सुसार ।
कार्यान्वित करके रहैं, “शरण” सुभाग्य निहार ॥

(२०८)

अपने सुन्दर ज्ञान को, करैं कृपा का दान ।
इसमें क्यों संकोच है, “शरण” सरणि पहचान ॥

(२०९)

श्रीमद्धर्माचार्यवृन्द, शिक्षाविद् विद्वान ।
छात्रमात्र को ज्ञान दें, "शरण" पुनीत विधान ॥

(२१०)

श्रेष्ठ प्रशासक है वही, श्रेष्ठ सुधीजन मान ।
छात्रों को शुभ-मार्ग का, "शरण" करावत भान ॥

(२११)

छात्रवर्ग का हृदय से, करैं परम उपकार ।
तदर्थ मङ्गल हितप्रद, "शरण" शुद्ध व्यवहार ॥

(२१२)

ऐसा सुन्दर कार्य हो, छात्रवृन्द हित शोध ।
जिससे उनका शुभ जीवन, "शरण" श्रेष्ठतम बोध ॥

(२१३)

मात[१] - पिता[२] - गुरुजन[३] - कवि[४], वैद्य[५] - प्रशासक[६] जान ।
सन्त[७] - सम्पादक[८] अष्टवर्ग, "शरण" श्रेष्ठ दें ज्ञान ॥

(२१४)

कालगति क्रम ज्ञानकर, तदनुसार उपदेश ।
शास्त्रविहित कर्तव्य हो, "शरण" तजैं सब क्लेश ॥

(२१५)

कर्तव्य बोध की शुभ निधि, श्रुति-पुराण-स्मृति शास्त्र ।
तदनुकूल सत्कार्य हो, "शरण" बनै सत्पात्र ॥

(२१६)

न्यायाधीश - अधिनियम, हो शास्त्र - अनुसार ।
वह कार्यान्वित आवश्यक, "शरण" उचित विचार ॥

(२१७)

राष्ट्र - नायक राष्ट्र का, निस्वार्थ - सेवा श्रेष्ठ ।
स्वराष्ट्रहित चिन्तन निरत, "शरण" वरण वह प्रेष्ठ ॥

(२१८)

दीन - दुःखी-असहाय जन, समुचित हो शुभ दान ।
अन्न - वसन सहयोग हो, "शरण" मुदित भगवान ॥

(२१९)

कलह - संघर्ष छोड़कर, श्रेष्ठ कर्म अवधार ।
सदा सौजन्य भाव हो, "शरण" विवेक विचार ॥

(२२०)

जो अपने निज कर्म में, सदा रहे अनुकूल ।
वह अतिशय गुणवान है, "शरण" करै ना भूल ॥

(२२१)

शास्त्रादि अनुशीलन सह, हो सर्वेश्वर ध्यान ।
आत्म निरीक्षण जो करै, "शरण" सदा शुभ मान ॥

(२२२)

उपद्रव अति हीन कर्म, कभी न मन में लाय ।
सदा शान्तिमय जीवन हो, "शरण" परम सुख पाय ॥

(२२३)

अपने अवगुण ध्यान कर, पर जन गुण अवलोक ।
सभी समस्या समाधान, "शरण" चित्त आलोक ॥

(२२४)

इत - उत डोले व्यर्थ में, वृथा ही वार्तालाप ।
अमूल्य समय को न बिता, "शरण" कर्म हरि जाप ॥

(२२५)

मृत्यु अवश्यम्भावी है, उसका नहि परिहार ।
सुतरां राधाकृष्ण का, "शरण" भजन ही सार ॥

(२२६)

धर्म रहित जो राजनीति, स्वदेश घातक मान ।
राजनीति नहि अपनीति, "शरण" अहित कर जान ॥

(२२७)

भारत - वसुधा भाग्य से, जन्म मिला नर देह ।
सनातन वैदिक विधि से, "शरण" आचरण नेह ॥

(२२८)

रामराज्य की स्थापना, मर्यादा अनुरूप ।
श्रीकृष्ण - गीतोपदेश, "शरण" स्वदेश स्वरूप ॥

(२२९)

वह शासक अतिश्रेष्ठ है, धर्मशास्त्र अनुकूल ।
स्वयं चले शुभ ज्ञान दे, "शरण" नहीं प्रतिकूल ॥

(२३०)

आश्रम वर्णव्यवस्था का, पालन शास्त्र - विधान ।
ज्ञान - विज्ञान ओत - प्रोत, “शरण” सुमंगल जान ॥

(२३१)

अपने - अपने धर्म में, रहो सदा संलग्न ।
यही उचित शुभ कर्म है, “शरण” श्रेष्ठ-पथ मग्न ॥

(२३२)

श्रीहरि - मन्दिर देवस्थान, अभिरक्षण दृढ़ ज्ञान ।
गङ्गा-यमुना-तीर्थस्थल, “शरण” प्रदूषण त्रान ॥

(२३३)

जो विधान प्रभु ने रचा, वही करो स्वीकार ।
निज मनमानी आचरण, करै “शरण” धिक्कार ॥

*

(१)

सरस्वती शुभ अर्चन करिये ।
निज करकमल सुशोभित वीणा, -मंगल झंकृति सुधारस भरिये ॥
केकि शुभासन राजत अनुपम, मात शारदा नित्य सुमरिये ।
श्रुतिविद्या अभिवर्षण करती, मुदित मुखाम्बुज हृदय अवधरिये ॥
सुरवृन्दादिक सेवित प्रतिपल, अद्भुत शोभा लखि भव तरिये ।
"शरण सदा राधासर्वेश्वर", मात कृपा बल सतत विचरिये ॥

(२)

मात सरस्वती प्रतिपल भजिये ।
महिमा इनकी गणपति गावत, जगत-वासना सब विधि तजिये ॥
अमित ज्ञान की दिव्य प्रभा का, अनुभव पाकर चित न विलजिये ।
"शरण सदा राधासर्वेश्वर", मधुर कृपा उन पाकर सजिये ॥

(३)

शारदा शोभित मोर-कन्ध पर ।
मणि-मुक्तामय माल सुशोभित, पुस्तक-माला वीणा श्रीकर ॥
ऋषि-मुनि-यतिजन सतत उपासत, सरस्वती शुभ दिव्य कांतिधर
"शरण सदा राधासर्वेश्वर", कृपामयी-श्री कृपा दान कर ॥

(४)

भजो भजो श्रीब्राह्मी माता ।
जिन पदपंकज परमाराधन, अद्भुत अनुपम ज्ञान गुण पाता ॥
निखिल शास्त्र शुभ विवेक समुदय, स्वाभाविक वह द्रुत प्रकटाता
"शरण सदा राधासर्वेश्वर", सरस्वती-गुण गावत धाता ॥

(५)

सरस्वती शुभ दर्शन करिये ।
जिनकी अनुपम दिव्य कृपा को, पाकर वाङ्मय विवेक भरिये ॥
चंचल मन को श्रीचरणाम्बुज, अभिरत करके भव-अघ तरिये ।
"शरण सदा राधासर्वेश्वर", अविरल उनके आश्रय परिये ॥

(६)

श्रीवाग्देवी कृपामयी है ।
आश्रित जन को श्रीहरिभक्ति, अविचल देती दयामयी है ॥
जो साधक जन उनको भजते, प्रिय फल पाते सुधामयी है ।
"शरण सदा राधासर्वेश्वर", वांछित-फलदा कलामयी है ॥

(७)

मात सरस्वती आरती करिये ।
वीणा शोभित श्रीहस्ताम्बुज, अद्भुत आभा हृदय अवधरिये ॥
कंचन-थारी गोघृत-वाती, पुनि-पुनि वारि नवरस भरिये ।
"शरण सदा राधासर्वेश्वर", कर नीराजन संकट टरिये ॥

(८)

शारदा-माता भजन भला है ।
प्रतिपल अपने मन को निर्मल, करके ध्यावो दुरित टला है ॥
भव-बन्धन यह सहज दूर हो, भजो शारदा मिलत कला है ।
"शरण सदा राधासर्वेश्वर", जय बोलो जय पुण्य फला है ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री श्रीजी महाराज द्वारा विरचित--

❊ ग्रन्थमाला ❊

	प्रकाशित	श्लोक सं.
१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातः स्वतवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२. श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३. उपदेश-दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३९५
६. श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८. हिन्दु संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९. भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३५
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५
१४. भारत-कल्पतरु (पद सं० १४६)	,,	
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६५
१६. विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६)	,,	
१७. नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०८
१९. श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६०
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी (पद सं. ६४-दोहा सं. ९२)	,,	
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम् (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २०)	,,	१०
२४. छात्र-विवेक-दर्शन (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० २४१)	,,	
२५. भारत-वीर-गौरव (हिन्दी-पद्यात्मक दोहा सं. १८१)	,,	
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० ३२)	,,	१७
२७. श्रीपरशुराम-स्तवावली (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं. ४६, पद सं. ६)	,,	२७
२८. श्रीराधा-राधना (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २८, दोहा सं० ५१)	,,	५९
२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३५
३१. श्रीराधामाधवरसविलास (दोहा सं० १०५३)	,,	
३२. गोशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) (दोहा सं० ६३, पद सं० १४)	,,	१३५
३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः (सं.-हि.-पद्यात्मक) (दोहा सं. १०१, पद सं. १६)	,,	८०
३४. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम्	अप्रकाशित	६३

कुल हिन्दी पद सं० २७०२ • कुल श्लोक सं० १८५४